अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे:-
स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414003497, +919414082607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org

होमवर्क - २०१२

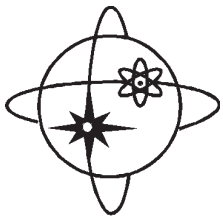

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

होमवर्क - 2012

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे:-
स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414003497, +919414082607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org

होमवर्क - २०१२

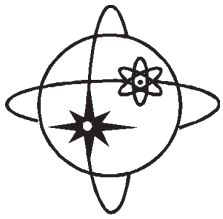

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

विषय सूची

क्रम	विषय	पेज नं.
होमवर्क :- 19.10.2011		3
होमवर्क :- 15.11.2011		5
होमवर्क :- 30.11.2011		6
होमवर्क :- 15.12.2011		10
होमवर्क :- 31.12.2011		13
होमवर्क :- 18.01.2012		16
होमवर्क :- 02.02.2012		19
होमवर्क :- 19.02.2012		23
होमवर्क :- 05.03.2012		25
होमवर्क :- 20.03.2012		28
होमवर्क :- 03.04.2012		33

⇨ देखो अभी तक की रिजल्ट में क्या सभी कहते हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं, बाप प्रत्यक्ष नहीं है। अभी बाप को प्रत्यक्ष करो।

⇨ अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं। अभी यह प्वाइंट रही हुई है। अभी अन्य आत्माओं के अन्दर यह प्रत्यक्ष हो कि भगवान स्वयं प्रत्यक्ष हो यह कार्य बहिनों द्वारा या भाईयों द्वारा करा रहे हैं। यह प्रत्यक्षता करनी है।

❖ **6 मास - तीव्र पुरुषार्थ के**

⇨ बापदादा को तीव्र पुरुषार्थी बहुत पसन्द हैं। कब तक साधारण पुरुषार्थ करेंगे। चलना है ना अभी तो घर जाना है ना! तो तीव्र पुरुषार्थी बनके जाना है ना! बापदादा को हर एक बच्चा विजयी हो, यह अच्छा लगता है। यह हुआ, यह हुआ... यह समाचार सुनना अच्छा नहीं लगता है।

⇨ अगर 6 मास तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तब तो आदत पड़ जायेगी।

❖ **पहली वार वालों से :-**

⇨ अभी लास्ट सो फास्ट बन सकते हो। मार्जिन है। अगर तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो जितना आगे बढ़ने चाहो उतना बढ़ सकते हो। सिर्फ अटेन्शन देना पड़ेगा बस। तीव्र पुरुषार्थ करते रहना।

विषय सूची

क्रम	विषय	पेज नं.
होमवर्क :- 19.10.2011		3
होमवर्क :- 15.11.2011		5
होमवर्क :- 30.11.2011		6
होमवर्क :- 15.12.2011		10
होमवर्क :- 31.12.2011		13
होमवर्क :- 18.01.2012		16
होमवर्क :- 02.02.2012		19
होमवर्क :- 19.02.2012		23
होमवर्क :- 05.03.2012		25
होमवर्क :- 20.03.2012		28
होमवर्क :- 03.04.2012		33

2

होमवर्क - 2012

⇨ देखो अभी तक की रिजल्ट में क्या सभी कहते हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं, बाप प्रत्यक्ष नहीं है। अभी बाप को प्रत्यक्ष करो।

⇨ अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं। अभी यह प्वाइंट रही हुई है। अभी अन्य आत्माओं के अन्दर यह प्रत्यक्ष हो कि भगवान स्वयं प्रत्यक्ष हो यह कार्य बहिनों द्वारा या भाईयों द्वारा करा रहे हैं। यह प्रत्यक्षता करनी है।

❖ 6 मास - तीव्र पुरुषार्थ के

⇨ बापदादा को तीव्र पुरुषार्थी बहुत पसन्द हैं। कब तक साधारण पुरुषार्थ करेंगे। चलना है ना अभी तो घर जाना है ना! तो तीव्र पुरुषार्थी बनके जाना है ना! बापदादा को हर एक बच्चा विजयी हो, यह अच्छा लगता है। यह हुआ, यह हुआ... यह समाचार सुनना अच्छा नहीं लगता है।

⇨ अगर 6 मास तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तब तो आदत पड़ जायेगी।

❖ पहली वार वालों से :-

⇨ अभी लास्ट सो फास्ट बन सकते हो। मार्जिन है। अगर तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो जितना आगे बढ़ने चाहो उतना बढ़ सकते हो। सिर्फ अटेन्शन देना पड़ेगा बस। तीव्र पुरुषार्थ करते रहना।

35

कर देना।

⇨ दो बातों का ध्यान रखना है एक तो संकल्प, दूसरा समय। इस संगम का समय एक-एक मिनट का कनेक्शन 21 जन्म के साथ है। संगम समय का एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है क्योंकि 21 जन्मों का कनेक्शन है।

❖ जगत अम्बा को फालो करो

⇨ बाप ब्रह्मा के हाथ में हाथ देके साथ चलना है। ब्रह्मा बाप का हाथ क्या है? श्रीमत। बापदादा की यही श्रीमत है कि अब बेफिक्र बादशाह बन सदा जैसे आपकी जगदम्बा ने पुरुषार्थ किया, बाप का कहना और जगत अम्बा का करना। ऐसे जगत अम्बा को फॉलो करो।

❖ मन को विजी रखने की ड्रिल करो

⇨ समय और संकल्प को सफल करना ही है। व्यर्थ नहीं जाये। सदा मन को बिजी रखो। चाहे मुरली के मनन में, चाहे सेवा में, हर समय बिजी रहो। अपना चार्ट बनाओ हर समय बीच-बीच में जो बापदादा ने ड्रिल सुनाई है भिन्न-भिन्न, अशरीरी बनने की, अपने तीन स्वरूप स्मृति की ड्रिल। ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता, इन तीनों रूपों में ड्रिल द्वारा अपने मन को बिजी रखो।

❖ अभी वापदादा को अपने चेहरे और चलन से प्रत्यक्ष करो

⇨ बापदादा चाहते हैं कि हर एक टीचर चेहरे से ब्रह्मा बाप समान ऐसे खुशनुमा नज़र आये। आपकी सूरत से बाप प्रत्यक्ष हो। कोई को भी देखे तो आपमें बाप की चमक दिखाई दे।

⇨ अब समय आ गया है, बाप को अपने चेहरे से प्रत्यक्ष करने का। अभी बाप को चेहरे से प्रत्यक्ष करना है।

होमवर्क :- 19.10.2011

❖ ब्रह्मा वाप समान रहमदिल वन सहयोग दो

⇨ बाप को सदा हर बच्चे में यही आशा है कि हर बच्चा बाप समान बन जाए। जैसे ब्रह्मा बाप विजयी बने, ऐसे हर बच्चा सदा विजयी बने।

⇨ इसके लिए हर कदम उठाते पहले चेक करो कि यह कदम ब्रह्मा बाप ने किया?

⇨ ब्रह्मा बाप ने हर बच्चे प्रति चाहे जानते थे कि यह बच्चा कमजोर है, पुरुषार्थ में भी, सेवा में भी लेकिन कमजोर के ऊपर और ही रहम और कल्याण की भावना रही।

⇨ ऐसे ही अपने परिवार के हरेक भाई या बहन प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, रहम और कल्याण की दृष्टि से उनके भी सहयोगी बनो।

⇨ जब ब्रह्मा बाप व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के विजयी बन कर्मातीत हुए तो फालो फादर।

❖ व्यर्थ संकल्प से मुक्त वनने की युक्ति

⇨ बापदादा ने देखा यह व्यर्थ संकल्प चलना, यह मैजारिटी बच्चों में अब भी संस्कार रहा हुआ है।

⇨ व्यर्थ संकल्प का आधार है मन, जो मनमनाभव होने नहीं देता।

⇨ मन है आपकी रचना है, आप मन के रचता हो तो मन को चलाने वाले हो। मन की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर के मालिक हो।

⇨ आपकी रचना मन कन्ट्रोलिंग पावर कम होने के कारण धोखा दे देता है।

⇨ मन को घोड़ा भी कहा जाता है लेकिन आपके पास श्रीमत की लगाम है।

⇨ लगाम को टाइट करने से अपने को व्यर्थ संकल्प की थोड़ी भी अपवित्रता को खत्म कर सकते हो।

होमवर्क - 2012

कर देना।

⇨ दो बातों का ध्यान रखना है एक तो संकल्प, दूसरा समय। इस संगम का समय एक-एक मिनट का कनेक्शन 21 जन्म के साथ है। संगम समय का एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है क्योंकि 21 जन्मों का कनेक्शन है।

❖ जगत अम्बा को फालो करो

⇨ बाप ब्रह्मा के हाथ में हाथ देके साथ चलना है। ब्रह्मा बाप का हाथ क्या है? श्रीमत। बापदादा की यही श्रीमत है कि अब बेफिक्र बादशाह बन सदा जैसे आपकी जगदम्बा ने पुरुषार्थ किया, बाप का कहना और जगत अम्बा का करना। ऐसे जगत अम्बा को फॉलो करो।

❖ मन को विजी रखने की ड्रिल करो

⇨ समय और संकल्प को सफल करना ही है। व्यर्थ नहीं जाये। सदा मन को बिजी रखो। चाहे मुरली के मनन में, चाहे सेवा में, हर समय बिजी रहो। अपना चार्ट बनाओ हर समय बीच-बीच में जो बापदादा ने ड्रिल सुनाई है भिन्न-भिन्न, अशरीरी बनने की, अपने तीन स्वरूप स्मृति की ड्रिल। ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता, इन तीनों रूपों में ड्रिल द्वारा अपने मन को बिजी रखो।

❖ अभी वापदादा को अपने चेहरे और चलन से प्रत्यक्ष करो

⇨ बापदादा चाहते हैं कि हर एक टीचर चेहरे से ब्रह्मा बाप समान ऐसे खुशनुमा नज़र आये। आपकी सूरत से बाप प्रत्यक्ष हो। कोई को भी देखे तो आपमें बाप की चमक दिखाई दे।

⇨ अब समय आ गया है, बाप को अपने चेहरे से प्रत्यक्ष करने का। अभी बाप को चेहरे से प्रत्यक्ष करना है।

34

होमवर्क - 2012

होमवर्क :- 19.10.2011

❖ ब्रह्मा वाप समान रहमदिल वन सहयोग दो

⇨ बाप को सदा हर बच्चे में यही आशा है कि हर बच्चा बाप समान बन जाए। जैसे ब्रह्मा बाप विजयी बने, ऐसे हर बच्चा सदा विजयी बने।

⇨ इसके लिए हर कदम उठाते पहले चेक करो कि यह कदम ब्रह्मा बाप ने किया?

⇨ ब्रह्मा बाप ने हर बच्चे प्रति चाहे जानते थे कि यह बच्चा कमजोर है, पुरुषार्थ में भी, सेवा में भी लेकिन कमजोर के ऊपर और ही रहम और कल्याण की भावना रही।

⇨ ऐसे ही अपने परिवार के हरेक भाई या बहन प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, रहम और कल्याण की दृष्टि से उनके भी सहयोगी बनो।

⇨ जब ब्रह्मा बाप व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के विजयी बन कर्मातीत हुए तो फालो फादर।

❖ व्यर्थ संकल्प से मुक्त वनने की युक्ति

⇨ बापदादा ने देखा यह व्यर्थ संकल्प चलना, यह मैजारिटी बच्चों में अब भी संस्कार रहा हुआ है।

⇨ व्यर्थ संकल्प का आधार है मन, जो मनमनाभव होने नहीं देता।

⇨ मन है आपकी रचना है, आप मन के रचता हो तो मन को चलाने वाले हो। मन की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर के मालिक हो।

⇨ आपकी रचना मन कन्ट्रोलिंग पावर कम होने के कारण धोखा दे देता है।

⇨ मन को घोड़ा भी कहा जाता है लेकिन आपके पास श्रीमत की लगाम है।

⇨ लगाम को टाइट करने से अपने को व्यर्थ संकल्प की थोड़ी भी अपवित्रता को खत्म कर सकते हो।

3

⇨ मन के मालिक बन मन को ऐसे बिजी करो जो और तरफ आकर्षित हो आपकी लगाम को ढीला नहीं करे।

⇨ मन के मालिक बन, जैसे ब्रह्मा बाप ने रोज़ मन की चेकिंग की, ऐसे रोज़ चेक करो और व्यर्थ संकल्प को समाप्त करो।

⇨ बापदादा यही चाहता है कि इस व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करो। इसमें टाइम बहुत जाता है।

⇨ बापदादा व्यर्थ संकल्प के समाप्ति का सबको संकल्प दे रहे हैं।

❖ **दृढ़ संकल्प**

⇨ आप बच्चों में तो संकल्प को पूर्ण करने की ताकत है। ब्रह्मा बाप का जन्म ही दृढ़ संकल्प से हुआ है। उस एक दृढ़ संकल्प ने इतने बच्चों का भविष्य बनाया। दृढ़ संकल्प क्या नहीं कर सकता। यह तो एक्जैम्पुल है आपके आगे।

⇨ संकल्प करते हो लेकिन उसमें दृढ़ता कम होती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है।

❖ **प्रभु परिवार**

⇨ बापदादा यह इशारा दे रहा है कि आपस में संस्कार मिलन की रास करो।

⇨ जब एक परिवार है, प्रभु परिवार है, लौकिक परिवार नहीं प्रभु परिवार है। प्रभु परिवार का अर्थ ही है एक दो में शुभ भावना, कल्याण की भावना।

⇨ एक दो में यही संकल्प रहे कि हम सभी साथ-साथ एक दो को आगे बढ़ाते मुक्ति का गेट खोलके साथ जाना ही है।

⇨ एक भी आत्मा एक दो से दूर नहीं हो, सब एक हो। यह संस्कार मिलन की रास करो।

⇨ मन में दृढ़ संकल्प करना कि एक भी मेरे से भारी नहीं हो, सब हल्के।

होमवर्क :- 03.04.2012

❖ **वेफिक्र वादशाह**

⇨ यह बेफिक्र बादशाह की जीवन बादशाही भी और बेफिक्र भी, कितनी प्यारी लगती है क्योंकि आप सभी ने बाप को फिक्र देकरके फखुर ले लिया है। फखुर भी अविनाशी फखुर ले लिया है। दिनरात कोई भी बात का फिक्र नहीं लेकिन फखुर है।

⇨ यह बेफिक्र जीवन की विधि बहुत सहज है। जो भी हद का मेरा-मेरा है उसको तेरा कर दिया। मेरे को तेरा करने से जीवन कितनी खुशनुमा बन जाती है। बेफिक्र जीवन बन गई।

⇨ फिकर वाली जीवन का आधार है व्यर्थ संकल्प। हर बच्चे के अन्दर व्यर्थ संकल्प का निशान भी नहीं रहे क्योंकि जब मेरे को तेरे में बदल दिया तो आप क्या हो गये? आप हो गये हर कर्म करते बेफिक्र बादशाह। कोई फिक्र नहीं क्यों, क्या, कैसे, कब तक... यह सब समाप्त हो गये।

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि यह 5-6 मास आप सभी को विश्व के दु:खी आत्माओं को पावरफुल वृत्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें देनी हैं। इसी में ही अपना मन बिजी रखना है।

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बेफिक्र बादशाह बच्चा अपने मन को अर्थात् वृत्ति को इतना बिजी रखे जो व्यर्थ को आने की मार्जिन ही नहीं रहे। मेहनत नहीं करनी पड़े लेकिन बाप के मोहब्बत में इतना बिजी रहो, वृत्ति की सेवा में इतना मन को बिजी रखो जो युद्ध भी नहीं करनी पड़े।

❖ **समय और संकल्प के महत्व को बुद्धि में रख कर्म करो**

⇨ बापदादा बच्चों को यही दृढ़ संकल्प कराने चाहते हैं, कभी भी व्यर्थ संकल्प को आने नहीं देंगे। उनका काम है आना, आपका काम क्या है? समाप्त

होमवर्क - 2012

⇨ मन के मालिक बन मन को ऐसे बिजी करो जो और तरफ आकर्षित हो आपकी लगाम को ढीला नहीं करे।

⇨ मन के मालिक बन, जैसे ब्रह्मा बाप ने रोज़ मन की चेकिंग की, ऐसे रोज़ चेक करो और व्यर्थ संकल्प को समाप्त करो।

⇨ बापदादा यही चाहता है कि इस व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करो। इसमें टाइम बहुत जाता है।

⇨ बापदादा व्यर्थ संकल्प के समाप्ति का सबको संकल्प दे रहे हैं।

❖ दृढ़ संकल्प

⇨ आप बच्चों में तो संकल्प को पूर्ण करने की ताकत है। ब्रह्मा बाप का जन्म ही दृढ़ संकल्प से हुआ है। उस एक दृढ़ संकल्प ने इतने बच्चों का भविष्य बनाया। दृढ़ संकल्प क्या नहीं कर सकता। यह तो एक्जैम्पुल है आपके आगे।

⇨ संकल्प करते हो लेकिन उसमें दृढ़ता कम होती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है।

❖ प्रभु परिवार

⇨ बापदादा यह इशारा दे रहा है कि आपस में संस्कार मिलन की रास करो।

⇨ जब एक परिवार है, प्रभु परिवार है, लौकिक परिवार नहीं प्रभु परिवार है। प्रभु परिवार का अर्थ ही है एक दो में शुभ भावना, कल्याण की भावना।

⇨ एक दो में यही संकल्प रहे कि हम सभी साथ-साथ एक दो को आगे बढ़ाते मुक्ति का गेट खोलके साथ जाना ही है।

⇨ एक भी आत्मा एक दो से दूर नहीं हो, सब एक हो। यह संस्कार मिलन की रास करो।

⇨ मन में दृढ़ संकल्प करना कि एक भी मेरे से भारी नहीं हो, सब हल्के।

4

होमवर्क - 2012

होमवर्क :- 03.04.2012

❖ वेफिक्र वादशाह

⇨ यह बेफिक्र बादशाह की जीवन बादशाही भी और बेफिक्र भी, कितनी प्यारी लगती है क्योंकि आप सभी ने बाप को फिक्र देकरके फखुर ले लिया है। फखुर भी अविनाशी फखुर ले लिया है। दिनरात कोई भी बात का फिक्र नहीं लेकिन फखुर है।

⇨ यह बेफिक्र जीवन की विधि बहुत सहज है। जो भी हद का मेरा-मेरा है उसको तेरा कर दिया। मेरे को तेरा करने से जीवन कितनी खुशनुमा बन जाती है। बेफिक्र जीवन बन गई।

⇨ फिकर वाली जीवन का आधार है व्यर्थ संकल्प। हर बच्चे के अन्दर व्यर्थ संकल्प का निशान भी नहीं रहे क्योंकि जब मेरे को तेरे में बदल दिया तो आप क्या हो गये? आप हो गये हर कर्म करते बेफिक्र बादशाह। कोई फिक्र नहीं क्यों, क्या, कैसे, कब तक... यह सब समाप्त हो गये।

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि यह 5-6 मास आप सभी को विश्व के दु:खी आत्माओं को पावरफुल वृत्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें देनी हैं। इसी में ही अपना मन बिजी रखना है।

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बेफिक्र बादशाह बच्चा अपने मन को अर्थात् वृत्ति को इतना बिजी रखे जो व्यर्थ को आने की मार्जिन ही नहीं रहे। मेहनत नहीं करनी पड़े लेकिन बाप के मोहब्बत में इतना बिजी रहो, वृत्ति की सेवा में इतना मन को बिजी रखो जो युद्ध भी नहीं करनी पड़े।

❖ समय और संकल्प के महत्व को बुद्धि में रख कर्म करो

⇨ बापदादा बच्चों को यही दृढ़ संकल्प कराने चाहते हैं, कभी भी व्यर्थ संकल्प को आने नहीं देंगे। उनका काम है आना, आपका काम क्या है? समाप्त

33

हल करा देना।

⇨ दो दिन हो गया है, ऐसा है, यह नहीं करना क्योंकि बहुत पीछे आये हो ना और आगे जाने चाहते हो तो यही एक बात करना, दिल में कोई भी व्यर्थ बात नहीं रखना।

⇨ इसके लिए अमृतवेला जरूर करना और उसके बाद अपने सारे दिन की दिनचर्या जिसमें मन बिजी रहे, कोई न कोई ड्रिल साथ-साथ करते रहना।

⇨ बीच-बीच में समय निकाल के एकदम अशरीरी बनने की ड्रिल जरूर करना है क्योंकि आने वाले समय में सेकण्ड में अशरीरी बनना ही पड़ेगा।

⇨ यह एक मिनट अशरीरी बनने की ड्रिल यह प्रैक्टिस जरूर करो। उस समय प्रैक्टिस नहीं कर सकेंगे।

⇨ यह जन्म-जन्म का बॉडीकान्सेस का अभ्यास उस समय अशरीरी बनने नहीं देगा इसलिए अभी से कोई भी समय निकाल सारे दिन में समय प्रति समय जो भी समय निश्चित करो एक सेकण्ड में अशरीरी आत्मा हूँ, आत्मा स्वरूप में स्थित हो जाए। बॉडी कान्सेस अपने तरफ खीचें नहीं। यह अभ्यास सभी को करना है।

❖ समय सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनो

⇨ सभी तीव्र पुरुषार्थी बनके रहना। पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि अभी समय है, सभी के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनने का। पुरुषार्थ का समय अभी गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। तो कभी भी साधारण पुरुषार्थी नहीं बनना। सदा चेक करना, तीव्रता है? साधारण तो नहीं हो गया! वैसे अभी समय भी सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनने का।

संस्कार नहीं मिलते हैं तो भारी होते हैं। चेक करो कोई भी हमारे से नाराज़ नहीं, लेकिन भारी भी नहीं होना चाहिए।

होमवर्क :- 15.11.2011

❖ तीन रूप और तीन रीति से सेवा करो

⇨ बापदादा ने कहा था कि सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले बच्चे चाहिए। व्यर्थ संकल्पों का नाम निशान न रहे।

⇨ जिसको भी सन्देश देते हो वह सन्देश सुन परिवर्तन करने के उमंग उत्साह में आ जाएं। अब बापदादा यह रिजल्ट चाहते हैं। इसके लिए

⇨ बापदादा बच्चों को राय देते हैं, आज्ञा भी करते हैं, कि एक ही समय पर तीन रूपों और तीन रीति से सेवा करो।

⇨ तीन रूप नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल, इन तीनों रूपों से सेवा करो।

⇨ तीनों रीति से सेवा करो, वह तीन रीति है मन्सा-वाचा-कर्मणा एक ही समय सेवा हो।

⇨ अभी आवश्यकता एक ही समय मन्सा पावरफुल हो, जिससे आत्माओं की भी मन्सा परिवर्तन हो जाए।

⇨ वाणी द्वारा सारी नॉलेज स्पष्ट हो जाए।

⇨ कर्म द्वारा सेवा से वह आत्मायें अनुभव करें कि सचमुच हम अपने परिवार में पहुंच गये हैं। परिवार की फीलिंग आने से नजदीक के साथी बन जायें।

❖ तीव्र पुरुषार्थ

⇨ बापदादा का कहने का यही सार है कि अभी हर एक को अपना तीव्र पुरुषार्थ कर और दृढ़ संकल्प करना है कि मुझे बाप समान बनना ही है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि अचानक परिवर्तन होना है।

होमवर्क - 2012

हल करा देना।

⇨ दो दिन हो गया है, ऐसा है, यह नहीं करना क्योंकि बहुत पीछे आये हो ना और आगे जाने चाहते हो तो यही एक बात करना, दिल में कोई भी व्यर्थ बात नहीं रखना।

⇨ इसके लिए अमृतवेला जरूर करना और उसके बाद अपने सारे दिन की दिनचर्या जिसमें मन बिजी रहे, कोई न कोई ड्रिल साथ-साथ करते रहना।

⇨ बीच-बीच में समय निकाल के एकदम अशरीरी बनने की ड्रिल जरूर करना है क्योंकि आने वाले समय में सेकण्ड में अशरीरी बनना ही पड़ेगा।

⇨ यह एक मिनट अशरीरी बनने की ड्रिल यह प्रैक्टिस जरूर करो। उस समय प्रैक्टिस नहीं कर सकेंगे।

⇨ यह जन्म-जन्म का बॉडीकान्सेस का अभ्यास उस समय अशरीरी बनने नहीं देगा इसलिए अभी से कोई भी समय निकाल सारे दिन में समय प्रति समय जो भी समय निश्चित करो एक सेकण्ड में अशरीरी आत्मा हूँ, आत्मा स्वरूप में स्थित हो जाए। बॉडी कान्सेस अपने तरफ खीचें नहीं। यह अभ्यास सभी को करना है।

❖ समय सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनो

⇨ सभी तीव्र पुरुषार्थी बनके रहना। पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि अभी समय है, सभी के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनने का। पुरुषार्थ का समय अभी गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। तो कभी भी साधारण पुरुषार्थी नहीं बनना। सदा चेक करना, तीव्रता है? साधारण तो नहीं हो गया! वैसे अभी समय भी सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनने का।

32

होमवर्क - 2012

संस्कार नहीं मिलते हैं तो भारी होते हैं। चेक करो कोई भी हमारे से नाराज़ नहीं, लेकिन भारी भी नहीं होना चाहिए।

होमवर्क :- 15.11.2011

❖ तीन रूप और तीन रीति से सेवा करो

⇨ बापदादा ने कहा था कि सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले बच्चे चाहिए। व्यर्थ संकल्पों का नाम निशान न रहे।

⇨ जिसको भी सन्देश देते हो वह सन्देश सुन परिवर्तन करने के उमंग उत्साह में आ जाएं। अब बापदादा यह रिजल्ट चाहते हैं। इसके लिए

⇨ बापदादा बच्चों को राय देते हैं, आज्ञा भी करते हैं, कि एक ही समय पर तीन रूपों और तीन रीति से सेवा करो।

⇨ तीन रूप नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल, इन तीनों रूपों से सेवा करो।

⇨ तीनों रीति से सेवा करो, वह तीन रीति है मन्सा-वाचा-कर्मणा एक ही समय सेवा हो।

⇨ अभी आवश्यकता एक ही समय मन्सा पावरफुल हो, जिससे आत्माओं की भी मन्सा परिवर्तन हो जाए।

⇨ वाणी द्वारा सारी नॉलेज स्पष्ट हो जाए।

⇨ कर्म द्वारा सेवा से वह आत्मायें अनुभव करें कि सचमुच हम अपने परिवार में पहुंच गये हैं। परिवार की फीलिंग आने से नजदीक के साथी बन जायें।

❖ तीव्र पुरुषार्थ

⇨ बापदादा का कहने का यही सार है कि अभी हर एक को अपना तीव्र पुरुषार्थ कर और दृढ़ संकल्प करना है कि मुझे बाप समान बनना ही है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि अचानक परिवर्तन होना है।

5

⇨ अभी तीव्र पुरुषार्थ कर स्व परिवर्तन की झलक बाहर स्टेज पर लानी पड़ेगी।

⇨ अपने को बाप समान, ब्रह्मा बाप समान फालो फादर करना ही है।

⇨ दृढ़ संकल्प भी करो। दृढ़ता की शक्ति बहुत सहयोग देती है।

❖ **ब्रह्मा वाप समान वनना ही है**

⇨ ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। कोई भी बातें आयें, बात के बजाए बाप को आगे रखो।

⇨ दृढ़ता को साथी बनाना, बाप को सदा सामने रखना, ब्रह्मा बाप को नयनों में समाये रखना और ब्रह्मा बाप ने क्या किया, मन्सा वाचा कर्मणा वही करना है।

⇨ कोई भी कर्म करने के पहले यह चेक करना पहले, ब्रह्मा बाप का यह संकल्प रहा, यह बोल रहा, यह कर्म रहा, यह संबंध रहा, यह सम्पर्क रहा? पहले सोचो पीछे करो।

होमवर्क :- 30.11.2011

❖ **तीन भाग्य सदा स्मृति में रखो**

⇨ एक जन्म का, दूसरा संबंध का और तीसरा प्राप्तियों का।

⇨ जन्म का भाग्य - आप सबको यह दिव्य जन्म, ब्राह्मण जन्म देने वाला स्वयं भाग्य विधाता है। तो सोचो, कितना बड़ा भाग्य है!

⇨ सम्बन्ध का भाग्य - तीनों सम्बन्ध बाप, शिक्षक, सतगुरू तीनों सम्बन्ध एक बाप से हैं। एक में ही तीन सम्बन्ध हैं। एक में तीनों सम्बन्ध होने के कारण याद भी, अनुभव भी सहज होता है।

⇨ प्राप्ति का भाग्य - जहाँ बाप है वहाँ प्राप्तियां तो सर्व और बेहद की है।

देखने चाहते हैं।

❖ **चेहरे और चलन की सेवा में आगे वढ़ो**

⇨ बापदादा यही चाहता है हर एक बच्चा शक्ल से दिखाई दे कि यह खुशनुमा और खुशकिस्मत वाली आत्मा है। अभी अपने चेहरे और चलन से सेवा में आगे बढ़ो।

⇨ जैसे कोई गरीब होता है उसको लाटरी मिल गई तो उसका चेहरा और चलन बोलता है ना! उसका चेहरा देख करके सब अनुभव करते हैं आज इसको कुछ मिला है। ऐसे ही आपकी चलन और चेहरे से मान जाएं कि इन्हों को कुछ विशेष प्राप्ति है।

❖ **व्रह्मा वाप समान खुश रहो और खुशी वाँटो**

⇨ बापदादा क्या चाहता है? ब्रह्मा बाप समान बनो। क्योंकि समय की हालतें तो हलचल में आ भी रही हैं और आनी भी हैं इसलिए बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी।

⇨ आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होवे। दुःखी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हों के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है।

⇨ बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे को चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिंचवा रहे हैं।

❖ **पहली वारी वालों से :-**

⇨ अभी फॉलो ब्रह्मा बाप। कभी भी कुछ भी होवे, कोई क्वेश्चन हो या कोई प्राब्लम हो, प्राब्लम की तो दुनिया ही है। तो फौरन अपनी टीचर द्वारा उसका

होमवर्क - 2012

⇨ अभी तीव्र पुरुषार्थ कर स्व परिवर्तन की झलक बाहर स्टेज पर लानी पड़ेगी।

⇨ अपने को बाप समान, ब्रह्मा बाप समान फालो फादर करना ही है।

⇨ दृढ़ संकल्प भी करो। दृढ़ता की शक्ति बहुत सहयोग देती है।

❖ व्रह्मा वाप समान वनना ही है

⇨ ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। कोई भी बातें आयें, बात के बजाए बाप को आगे रखो।

⇨ दृढ़ता को साथी बनाना, बाप को सदा सामने रखना, ब्रह्मा बाप को नयनों में समाये रखना और ब्रह्मा बाप ने क्या किया, मन्सा वाचा कर्मणा वही करना है।

⇨ कोई भी कर्म करने के पहले यह चेक करना पहले, ब्रह्मा बाप का यह संकल्प रहा, यह बोल रहा, यह कर्म रहा, यह संबंध रहा, यह सम्पर्क रहा? पहले सोचो पीछे करो।

होमवर्क :- 30.11.2011

❖ तीन भाग्य सदा स्मृति में रखो

⇨ एक जन्म का, दूसरा संबंध का और तीसरा प्राप्तियों का।

⇨ जन्म का भाग्य - आप सबको यह दिव्य जन्म, ब्राह्मण जन्म देने वाला स्वयं भाग्य विधाता है। तो सोचो, कितना बड़ा भाग्य है!

⇨ सम्बन्ध का भाग्य - तीनों सम्बन्ध बाप, शिक्षक, सतगुरू तीनों सम्बन्ध एक बाप से हैं। एक में ही तीन सम्बन्ध हैं। एक में तीनों सम्बन्ध होने के कारण याद भी, अनुभव भी सहज होता है।

⇨ प्राप्ति का भाग्य - जहाँ बाप है वहाँ प्राप्तियां तो सर्व और बेहद की है।

6

होमवर्क - 2012

देखने चाहते हैं।

❖ चेहरे और चलन की सेवा में आगे वढ़ो

⇨ बापदादा यही चाहता है हर एक बच्चा शक्ल से दिखाई दे कि यह खुशनुमा और खुशकिस्मत वाली आत्मा है। अभी अपने चेहरे और चलन से सेवा में आगे बढ़ो।

⇨ जैसे कोई गरीब होता है उसको लाटरी मिल गई तो उसका चेहरा और चलन बोलता है ना! उसका चेहरा देख करके सब अनुभव करते हैं आज इसको कुछ मिला है। ऐसे ही आपकी चलन और चेहरे से मान जाएं कि इन्हों को कुछ विशेष प्राप्ति है।

❖ व्रह्मा वाप समान खुश रहो और खुशी वाँटो

⇨ बापदादा क्या चाहता है? ब्रह्मा बाप समान बनो। क्योंकि समय की हालतें तो हलचल में आ भी रही हैं और आनी भी हैं इसलिए बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी।

⇨ आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होवे। दुःखी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हों के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है।

⇨ बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे को चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिंचवा रहे हैं।

❖ पहली वारी वालों से :-

⇨ अभी फॉलो ब्रह्मा बाप। कभी भी कुछ भी होवे, कोई क्वेश्चन हो या कोई प्राब्लम हो, प्राब्लम की तो दुनिया ही है। तो फौरन अपनी टीचर द्वारा उसका

31

❖ **वाप का कहना और वच्चों का करना - यह है सच्चा प्यार**

⇨ ब्रह्मा बाप ने देखो कदम-कदम श्रीमत पर चलके आप सभी को करके दिखाया। क्या करना है, कैसे करना है, एक्जैम्पुल है। साकार में एक्जैम्पुल है। निराकार की बात तो छोड़ो लेकिन ब्रह्मा बाप साकार में आपके साथी थे। तो जैसे ब्रह्मा बाप श्रीमत का हाथ में हाथ मिलाके फरिश्ता बन गया। ऐसे ही फॉलो फादर।

⇨ प्यार का प्रैक्टिकल रूप है ब्रह्मा बाप का करना और कहना और बच्चों को बाप समान करना, यह है सच्चा दिल का प्यार।

⇨ फॉलो करना है तो पहले सोचो, संकल्प करने के पहले सोचो क्या यह संकल्प ब्रह्मा बाप का है! अगर है तो प्रैक्टिकल करो। करके पीछे नहीं सोचो। लेकिन पहले सोचके फिर फॉलो करो। ब्रह्मा बाप को फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना।

❖ **संतुष्टता की शक्ति धारण कर शुभभावना रखो**

⇨ बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे में ब्रह्मा बाप समान देखने चाहते हैं। इस एक सन्तुष्टता की शक्ति में सब शक्तियां आ जायेंगी। बापदादा का विशेष वरदान है सन्तुष्टता के शक्ति भव! कुछ भी हो अपनी सन्तुष्टता को कभी नहीं छोड़ना।

⇨ कोई कुछ भी करता है, तो आप समझते भी हो यह ठीक नहीं है फिर दिल में क्यों रखते हो? यह ऐसा करता, यह ऐसा करता है, इसका स्वभाव ऐसा है, इसका ऐसा है। दिल में नहीं रखो।

⇨ सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखकर अपनी शुभ कामना को कार्य में लगाओ। अपनी दिल में सदा बाप को रखते हुए बाप समान बन जायेंगे।

⇨ बापदादा अभी एक-एक बच्चे को शुभ कामना, शुभ भावना सम्पन्न आत्मा

❖ **तीन सम्बन्ध द्वारा प्राप्ति**

⇨ **वाप द्वारा प्राप्त भाग्य -** बाप द्वारा क्या मिलता है? वर्सा। वर्सा भी कितना ऊंचा मिलता है और यह वर्सा कितना समय चलता है क्योंकि परमात्म बाप द्वारा प्राप्त होता है।

⇨ **शिक्षक द्वारा प्राप्त भाग्य -** शिक्षा से पद की प्राप्ति होती है। आपको भी शिक्षक द्वारा राज्यपद की प्राप्ति हुई है। अभी भी स्वराज्य के राजा हो। आत्मा राजयोगी होने के कारण स्वराज्य अधिकारी बनती है। स्व पर राज्य करती है। आत्मा मालिक होके इन कर्मेन्द्रियों की राजा बन जाती है। अभी का स्वराज्य और भविष्य में भी राज्य भाग्य प्राप्त होता है। तो डबल राज्य अभी भी और भविष्य में भी पद की प्राप्ति होती है।

⇨ **सतगुरु द्वारा प्राप्त भाग्य -** सतगुरू द्वारा गुरू की श्रीमत मिलती है।

⇨ बाप यही चाहते हैं कि सदा इन तीन सम्बन्धों से हर बच्चा आगे आगे उड़ता चले।

❖ **समय का इशारा**

⇨ बापदादा समय का इशारा दे रहे हैं। अभी संगम का समय अति वैल्युबुल है और वर्तमान समय के प्रमाण सब अचानक होना है इसलिए सदा एवररेडी बनना है ना!

⇨ तो बापदादा समय का इशारा दे रहे हैं। इस एक जन्म में 21 जन्मों की प्रालब्ध बनानी है। तो सोचो कितना अटेन्शन देना है।

⇨ बाप का हर बच्चे के साथ प्यार है, बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा बाप के साथ-साथ चले और साथ-साथ राज्य अधिकारी बनें।

⇨ इस समय इस छोटे से जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति निश्चित है। तो सोचो संगम का छोटा सा जन्म एक एक मिनट कितना महान है! हिसाब लगाओ, इस छोटे-से जन्म में 21 जन्म का राज्य भाग्य लेना है तो संगम का एक मिनट भी

होमवर्क - 2012

❖ वाप का कहना और वच्चों का करना - यह है सच्चा प्यार

⇨ ब्रह्मा बाप ने देखो कदम-कदम श्रीमत पर चलके आप सभी को करके दिखाया। क्या करना है, कैसे करना है, एक्जैम्पुल है। साकार में एक्जैम्पुल है। निराकार की बात तो छोड़ो लेकिन ब्रह्मा बाप साकार में आपके साथी थे। तो जैसे ब्रह्मा बाप श्रीमत का हाथ में हाथ मिलाके फरिश्ता बन गया। ऐसे ही फॉलो फादर।

⇨ प्यार का प्रैक्टिकल रूप है ब्रह्मा बाप का करना और कहना और बच्चों को बाप समान करना, यह है सच्चा दिल का प्यार।

⇨ फॉलो करना है तो पहले सोचो, संकल्प करने के पहले सोचो क्या यह संकल्प ब्रह्मा बाप का है! अगर है तो प्रैक्टिकल करो। करके पीछे नहीं सोचो। लेकिन पहले सोचके फिर फॉलो करो। ब्रह्मा बाप को फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना।

❖ संतुष्टता की शक्ति धारण कर शुभभावना रखो

⇨ बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे में ब्रह्मा बाप समान देखने चाहते हैं। इस एक सन्तुष्टता की शक्ति में सब शक्तियां आ जायेंगी। बापदादा का विशेष वरदान है सन्तुष्टता के शक्ति भव! कुछ भी हो अपनी सन्तुष्टता को कभी नहीं छोड़ना।

⇨ कोई कुछ भी करता है, तो आप समझते भी हो यह ठीक नहीं है फिर दिल में क्यों रखते हो? यह ऐसा करता, यह ऐसा करता है, इसका स्वभाव ऐसा है, इसका ऐसा है। दिल में नहीं रखो।

⇨ सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखकर अपनी शुभ कामना को कार्य में लगाओ। अपनी दिल में सदा बाप को रखते हुए बाप समान बन जायेंगे।

⇨ बापदादा अभी एक-एक बच्चे को शुभ कामना, शुभ भावना सम्पन्न आत्मा

30

होमवर्क - 2012

❖ तीन सम्बन्ध द्वारा प्राप्ति

⇨ वाप द्वारा प्राप्त भाग्य - बाप द्वारा क्या मिलता है? वर्सा। वर्सा भी कितना ऊंचा मिलता है और यह वर्सा कितना समय चलता है क्योंकि परमात्म बाप द्वारा प्राप्त होता है।

⇨ शिक्षक द्वारा प्राप्त भाग्य - शिक्षा से पद की प्राप्ति होती है। आपको भी शिक्षक द्वारा राज्यपद की प्राप्ति हुई है। अभी भी स्वराज्य के राजा हो। आत्मा राजयोगी होने के कारण स्वराज्य अधिकारी बनती है। स्व पर राज्य करती है। आत्मा मालिक होके इन कर्मेन्द्रियों की राजा बन जाती है। अभी का स्वराज्य और भविष्य में भी राज्य भाग्य प्राप्त होता है। तो डबल राज्य अभी भी और भविष्य में भी पद की प्राप्ति होती है।

⇨ सतगुरु द्वारा प्राप्त भाग्य - सतगुरू द्वारा गुरू की श्रीमत मिलती है।

⇨ बाप यही चाहते हैं कि सदा इन तीन सम्बन्धों से हर बच्चा आगे आगे उड़ता चले।

❖ समय का इशारा

⇨ बापदादा समय का इशारा दे रहे हैं। अभी संगम का समय अति वैल्युबुल है और वर्तमान समय के प्रमाण सब अचानक होना है इसलिए सदा एवररेडी बनना है ना!

⇨ तो बापदादा समय का इशारा दे रहे हैं। इस एक जन्म में 21 जन्मों की प्रालब्ध बनानी है। तो सोचो कितना अटेन्शन देना है।

⇨ बाप का हर बच्चे के साथ प्यार है, बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा बाप के साथ-साथ चले और साथ-साथ राज्य अधिकारी बनें।

⇨ इस समय इस छोटे से जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति निश्चित है। तो सोचो संगम का छोटा सा जन्म एक एक मिनट कितना महान है! हिसाब लगाओ, इस छोटे-से जन्म में 21 जन्म का राज्य भाग्य लेना है तो संगम का एक मिनट भी

7

कितना वैल्युबुल है। इतनी वैल्यु को जान कर्म करो।

❖ समय और संकल्प सफल करो

⇨ बापदादा ने सुनाया है कि दो बातों का विशेष अटेन्शन दो। एक समय और दूसरा संकल्प। संकल्प व्यर्थ न जाये, समय व्यर्थ न जाये। एक एक सेकण्ड सफल हो।

❖ सर्व शक्तियों का प्रयोग कर पुरुषार्थ में तीव्रता लाओ

⇨ सभी बच्चे अपने अपने पुरुषार्थ में अभी तीव्रता लाओ। सभी का तीव्रता का पुरुषार्थ अभी होना चाहिए। बापदादा हर बच्चे को बालक सो मालिक देखने चाहते हैं। किसका मालिक? सर्व खजानों का मालिक।

⇨ जिस समय जो शक्ति की आवश्यकता होती है, वह समय पर नहीं आती है। इसका कारण क्या?

⇨ जिस समय शक्ति नहीं आती हैं, उसका कारण है कि आप अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट नहीं होते इसीलिए बिना सीट के आर्डर कोई नहीं मानता। तो सदा अपनी स्वमान की सीट पर सेट रहो।

⇨ बापदादा ने हर एक को कितने स्वमान दिये हैं। कितनी बड़ी स्वमान की सीट है! गिनती करो, कितने स्वमान बाप ने दिये हैं?

⇨ स्वमान की सीट पर सेट होना इसका अभ्यास सदा करो। चेक करो चाहे कर्मयोग में हो, चाहे सेवा में हो, चाहे अपने मनन मंथन में हो लेकिन सीट पर सेट हैं तो सर्वशक्तियां हाज़िर होती हैं।

❖ अनुभवी स्वरूप

⇨ सबसे बड़ी शक्ति अनुभव की है। अनुभवी स्वरूप, सर्वशक्तियों के अनुभवी स्वरूप, मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्ति स्वरूप, तो अनुभवी स्वरूप बनने में कुछ कमी दिखाई दी।

❖ कभी-कभी शव्द निकाल सदा शव्द एड़ करो

⇨ बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता है। सदा खुशनुमा। कभी-कभी शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में ही नहीं है, सदा।

⇨ बापदादा बहुत समय से कह रहे हैं कोई भी हलचल अचानक आनी है। उसकी तैयारी के लिए अगर अभी से कभी कभी के संस्कार होंगे तो क्या सदाकाल के राज्यभाग्य के अधिकारी बन सकेंगे?

⇨ ब्रह्मा बाप से सबका दिल का प्यार है। ब्रह्मा बाप ने कभी कभी शब्द बोला! ब्रह्मा बाप ने कभी शिव पिता से यह नहीं कहा कि कभी-कभी होता है। सदा फॉलो फादर किया और साथ में आपको भी कराया क्योंकि ब्रह्मा बाप का बच्चों से जिगरी प्यार है।

⇨ ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात् ब्रह्मा बाप का कहना और ब्रह्माकुमार कुमारी का मानना। प्यार अर्थात् न्योछावर - उनकी आज्ञा पर।

❖ आप विजयी वनो तो वावा विजय माला में नम्वर दे देगा

⇨ बापदादा हर बच्चे को माला का विजयी रत्न बनाने चाहते हैं। तो अपने को माला का मणका समझते हो? विजयी समझते हो?

⇨ अगर आप सम्पन्न बनें, विजयी बनें तो 108 की माला है यह नहीं सोचो, बापदादा बीच में लड़िया भी लगा देगा। लेकिन आप विजयी बनो। आप अगर सम्पन्न बनें तो बाप नम्बर दे ही देगा क्योंकि बाप का हर बच्चे से प्यार है।

⇨ बापदादा आज स्पष्ट सुना रहे हैं, कि आप और बातें नहीं सोचो यह कैसे होगा, यह क्या होगा, आप अपने को योग्य आत्मा बनाओ। कर्मयोगी आत्मा बनाओ। बाकी बाप हर बच्चे को ऐसा योग्य बच्चा जो बनेगा उसको सर्व प्राप्ति का वरदान भी देके आगे बढ़ायेगा, पीछे नहीं रखेगा।

होमवर्क - 2012

कितना वैल्युबुल है। इतनी वैल्यु को जान कर्म करो।

❖ समय और संकल्प सफल करो

⇨ बापदादा ने सुनाया है कि दो बातों का विशेष अटेन्शन दो। एक समय और दूसरा संकल्प। संकल्प व्यर्थ न जाये, समय व्यर्थ न जाये। एक एक सेकण्ड सफल हो।

❖ सर्व शक्तियों का प्रयोग कर पुरुषार्थ में तीव्रता लाओ

⇨ सभी बच्चे अपने अपने पुरुषार्थ में अभी तीव्रता लाओ। सभी का तीव्रता का पुरुषार्थ अभी होना चाहिए। बापदादा हर बच्चे को बालक सो मालिक देखने चाहते हैं। किसका मालिक? सर्व खजानों का मालिक।

⇨ जिस समय जो शक्ति की आवश्यकता होती है, वह समय पर नहीं आती है। इसका कारण क्या?

⇨ जिस समय शक्ति नहीं आती हैं, उसका कारण है कि आप अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट नहीं होते इसीलिए बिना सीट के आर्डर कोई नहीं मानता। तो सदा अपनी स्वमान की सीट पर सेट रहो।

⇨ बापदादा ने हर एक को कितने स्वमान दिये हैं। कितनी बड़ी स्वमान की सीट है! गिनती करो, कितने स्वमान बाप ने दिये हैं?

⇨ स्वमान की सीट पर सेट होना इसका अभ्यास सदा करो। चेक करो चाहे कर्मयोग में हो, चाहे सेवा में हो, चाहे अपने मनन मंथन में हो लेकिन सीट पर सेट हैं तो सर्वशक्तियां हाज़िर होती हैं।

❖ अनुभवी स्वरूप

⇨ सबसे बड़ी शक्ति अनुभव की है। अनुभवी स्वरूप, सर्वशक्तियों के अनुभवी स्वरूप, मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्ति स्वरूप, तो अनुभवी स्वरूप बनने में कुछ कमी दिखाई दी।

8

होमवर्क - 2012

❖ कभी-कभी शव्द निकाल सदा शव्द एड़ करो

⇨ बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता है। सदा खुशनुमा। कभी-कभी शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में ही नहीं है, सदा।

⇨ बापदादा बहुत समय से कह रहे हैं कोई भी हलचल अचानक आनी है। उसकी तैयारी के लिए अगर अभी से कभी कभी के संस्कार होंगे तो क्या सदाकाल के राज्यभाग्य के अधिकारी बन सकेंगे?

⇨ ब्रह्मा बाप से सबका दिल का प्यार है। ब्रह्मा बाप ने कभी कभी शब्द बोला! ब्रह्मा बाप ने कभी शिव पिता से यह नहीं कहा कि कभी-कभी होता है। सदा फॉलो फादर किया और साथ में आपको भी कराया क्योंकि ब्रह्मा बाप का बच्चों से जिगरी प्यार है।

⇨ ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात् ब्रह्मा बाप का कहना और ब्रह्माकुमार कुमारी का मानना। प्यार अर्थात् न्योछावर - उनकी आज्ञा पर।

❖ आप विजयी वनो तो वावा विजय माला में नम्वर दे देगा

⇨ बापदादा हर बच्चे को माला का विजयी रत्न बनाने चाहते हैं। तो अपने को माला का मणका समझते हो? विजयी समझते हो?

⇨ अगर आप सम्पन्न बनें, विजयी बनें तो 108 की माला है यह नहीं सोचो, बापदादा बीच में लड़िया भी लगा देगा। लेकिन आप विजयी बनो। आप अगर सम्पन्न बनें तो बाप नम्बर दे ही देगा क्योंकि बाप का हर बच्चे से प्यार है।

⇨ बापदादा आज स्पष्ट सुना रहे हैं, कि आप और बातें नहीं सोचो यह कैसे होगा, यह क्या होगा, आप अपने को योग्य आत्मा बनाओ। कर्मयोगी आत्मा बनाओ। बाकी बाप हर बच्चे को ऐसा योग्य बच्चा जो बनेगा उसको सर्व प्राप्ति का वरदान भी देके आगे बढ़ायेगा, पीछे नहीं रखेगा।

29

दृढ़ता माना ही सफलता। अगर सफलता नहीं है तो दृढ़ता नहीं कहेंगे। तो अभी दृढ़ता भव! यह अपना विशेष स्वमान रोज़ अमृतवेले स्मृति में लाना और उस विधि पूर्वक आगे बढ़ना।

❖ **पहली वारी वालों से :-**

⇨ हाहाकार के पहले अपना भाग्य बना दिया। अभी तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। पुरुषार्थी नहीं बनना तीव्र पुरुषार्थी बनना। अभी भी अगर तीव्र पुरुषार्थ किया तो तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ सकते हो। मार्जिन तीव्र पुरुषार्थ की है। साधारण पुरुषार्थ का टाइम गया।

होमवर्क :- 20.03.2012

❖ **संतुष्टता की शक्ति**

⇨ यह सन्तुष्टता की शक्ति सबसे महान है इसलिए इसमें सर्व प्राप्तियां हैं।

⇨ सन्तुष्टता की शक्ति धारण करने वाली सन्तुष्टमणियां स्वयं को भी प्रिय, बाप को भी प्रिय, परिवार को भी प्रिय हैं क्योंकि सन्तुष्टता जहाँ है वहाँ सर्वशक्तियां सन्तुष्टता में समाई हुई हैं।

⇨ सन्तुष्टता की शक्ति का वायुमण्डल चारों ओर फैलता है।

⇨ सन्तुष्टमणि वाली आत्मायें कभी भी माया से हार नहीं खा सकती, माया हार खाती है।

⇨ सन्तुष्टमणि आत्मायें सर्व की दिल को अपना बना सकती हैं।

⇨ सन्तुष्टमणि आत्मा चाहे माया, चाहे प्रकृति के भिन्न-भिन्न हलचल को ऐसे अनुभव करती जैसे एक कार्टून को देख रहे हैं।

⇨ ऐसे हर एक बच्चा अपने को सन्तुष्टता की शक्ति में सम्पन्न समझते हैं? अपने से पूछो कि मैं सन्तुष्टमणि हूँ?

❖ **अमृतवेला को पावरफुल वनाओ**

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि अमृतवेले लाइट माइट स्वरूप के अनुभवी मूर्त बन बैठें क्योंकि यह अमृतवेले के योग की सकाश सारे वायुमण्डल में फैलती है। इस अनुभव को और आगे बढ़ाओ। जैसे ब्रह्मा बाबा को देखा, कितनी पावरफुल फरिश्ते स्वरूप की स्थिति रही। ऐसे ही इस अमृतवेले को अभी अपने अपने रूप से अटेन्शन और अथक होकर दो।

❖ **मनन शक्ति को वढ़ाओ**

⇨ बापदादा ने पहले भी इशारा दिया कि अपने मन को सदा बिजी रखो। चाहे मन्सा सेवा से, चाहे वाचा से, चाहे मनन शक्ति में बिजी रखो। मनन करो। मनन शक्ति मन को एकाग्र बना देती है।

⇨ मनन शक्ति को भी सारे दिन में बढ़ाओ।

❖ **दृढ़ता को प्रयोग में लाओ**

⇨ पुरुषार्थ में दृढ़ता कम है। बीच बीच में अलबेलापन आ जाता है। हो जायेंगे, बन जायेंगे... यह अलबेलापन पुरुषार्थ को ढीला कर देता है।

⇨ अभी हर एक को दृढ़ संकल्प कर रोज़ बापदादा को अपनी रिजल्ट सारे दिन की कैसी देनी है? - तीव्र पुरुषार्थ की। पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ।

❖ **अपना प्रोग्राम आप वनाओ**

⇨ अभी यही विशेष अटेन्शन दो, अपने आप अपना प्रोग्राम बनाओ, जिसमें सारा दिन मन को बिजी रखो। अपना प्रोग्राम आप बनाओ। टाइमटेबुल अपना आप बनाओ, मन को बिजी रखने का। चाहे मनन करो, चाहे सेवा करो, चाहे एक दो को अटेन्शन खिंचवाओ लेकिन बिजी रखो। मन के बिजी रहने में बिजनेसमैन नम्बरवन बनो।

होमवर्क - 2012

दृढ़ता माना ही सफलता। अगर सफलता नहीं है तो दृढ़ता नहीं कहेंगे। तो अभी दृढ़ता भव! यह अपना विशेष स्वमान रोज़ अमृतवेले स्मृति में लाना और उस विधि पूर्वक आगे बढ़ना।

❖ पहली वारी वालों से :-

⇨ हाहाकार के पहले अपना भाग्य बना दिया। अभी तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। पुरुषार्थी नहीं बनना तीव्र पुरुषार्थी बनना। अभी भी अगर तीव्र पुरुषार्थ किया तो तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ सकते हो। मार्जिन तीव्र पुरुषार्थ की है। साधारण पुरुषार्थ का टाइम गया।

होमवर्क :- 20.03.2012

❖ संतुष्टता की शक्ति

⇨ यह सन्तुष्टता की शक्ति सबसे महान है इसलिए इसमें सर्व प्राप्तियां हैं।

⇨ सन्तुष्टता की शक्ति धारण करने वाली सन्तुष्टमणियां स्वयं को भी प्रिय, बाप को भी प्रिय, परिवार को भी प्रिय हैं क्योंकि सन्तुष्टता जहाँ है वहाँ सर्वशक्तियां सन्तुष्टता में समाई हुई हैं।

⇨ सन्तुष्टता की शक्ति का वायुमण्डल चारों ओर फैलता है।

⇨ सन्तुष्टमणि वाली आत्मायें कभी भी माया से हार नहीं खा सकती, माया हार खाती है।

⇨ सन्तुष्टमणि आत्मायें सर्व की दिल को अपना बना सकती हैं।

⇨ सन्तुष्टमणि आत्मा चाहे माया, चाहे प्रकृति के भिन्न-भिन्न हलचल को ऐसे अनुभव करती जैसे एक कार्टून को देख रहे हैं।

⇨ ऐसे हर एक बच्चा अपने को सन्तुष्टता की शक्ति में सम्पन्न समझते हैं? अपने से पूछो कि मैं सन्तुष्टमणि हूँ?

28

होमवर्क - 2012

❖ अमृतवेला को पावरफुल वनाओ

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि अमृतवेले लाइट माइट स्वरूप के अनुभवी मूर्त बन बैठें क्योंकि यह अमृतवेले के योग की सकाश सारे वायुमण्डल में फैलती है। इस अनुभव को और आगे बढ़ाओ। जैसे ब्रह्मा बाबा को देखा, कितनी पावरफुल फरिश्ते स्वरूप की स्थिति रही। ऐसे ही इस अमृतवेले को अभी अपने अपने रूप से अटेन्शन और अथक होकर दो।

❖ मनन शक्ति को वढ़ाओ

⇨ बापदादा ने पहले भी इशारा दिया कि अपने मन को सदा बिजी रखो। चाहे मन्सा सेवा से, चाहे वाचा से, चाहे मनन शक्ति में बिजी रखो। मनन करो। मनन शक्ति मन को एकाग्र बना देती है।

⇨ मनन शक्ति को भी सारे दिन में बढ़ाओ।

❖ दृढ़ता को प्रयोग में लाओ

⇨ पुरुषार्थ में दृढ़ता कम है। बीच बीच में अलबेलापन आ जाता है। हो जायेंगे, बन जायेंगे... यह अलबेलापन पुरुषार्थ को ढीला कर देता है।

⇨ अभी हर एक को दृढ़ संकल्प कर रोज़ बापदादा को अपनी रिजल्ट सारे दिन की कैसी देनी है? - तीव्र पुरुषार्थ की। पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ।

❖ अपना प्रोग्राम आप वनाओ

⇨ अभी यही विशेष अटेन्शन दो, अपने आप अपना प्रोग्राम बनाओ, जिसमें सारा दिन मन को बिजी रखो। अपना प्रोग्राम आप बनाओ। टाइमटेबुल अपना आप बनाओ, मन को बिजी रखने का। चाहे मनन करो, चाहे सेवा करो, चाहे एक दो को अटेन्शन खिंचवाओ लेकिन बिजी रखो। मन के बिजी रहने में बिजनेसमैन नम्बरवन बनो।

9

❖ **पूर्वज की स्मृति रख रहमदिल वनो**

⇨ समय आगे बढ़ रहा है, अति में जा रहा है, तो समय का परिवर्तन करने वाले क्या आप पूर्वजों को अपने दु:खी परिवार पर रहम नहीं आता? रहमदिल बनो। दु:खियों को सुख का रास्ता बताओ, चाहे मन्सा से, चाहे वाचा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से। अपना परिवार है ना! तो परिवार का दु:ख मिटाना है। रहमदिल बनो। अच्छा।

होमवर्क :- 15.12.2011

❖ **वेफिक्र वादशाह**

⇨ सभी बच्चों ने अपने फिकर बाप को देकर बाप से फखुर ले लिया है।

⇨ आप भी हर एक सवेरे से उठते कर्म करते भी बेफिक्र और बादशाह बन चलते हो ना! यह बेफिक्र का जीवन कितना प्यारा लगता है।

⇨ बेफिक्र की निशानी क्या दिखाई देती है? हर एक के मस्तक में लाइट, आत्मा चमकती हुई दिखाई देती है।

⇨ यह बेफिक्र जीवन कैसे बनी? बाप ने सभी बच्चों के जीवन से फिकर लेकर फखुर दे दिया है।

⇨ अगर कोई बोझ भी आता है तो बोझ अर्थात् फिकर बाप को देकर फखुर ले सकते हैं।

⇨ आप सबको बेफिक्र लाइफ पसन्द है ना! देखने वाले भी बेफिक्र लाइफ पसन्द करते हैं।

⇨ बापदादा हर बच्चे को बेफिक्र बादशाह देखने चाहते हैं।

⇨ बेफिक्र बादशाह बनने की बहुत सहज विधि है जो भी थोड़ा बहुत फिकर आता है तो मेरे को तेरे में बदल लो। यह हद के मेरेपन को, मेरे को तेरे में बदलने की बहुत सहज विधि है - संकल्प कर लिया सब तेरा और मेरा क्या

हो जायेगा। तो बापदादा जब चक्र लगाके चारों ओर देश विदेश के अज्ञानी बच्चों को देखते हैं तो तरस आता है इसलिए आप सब भी अब दु:ख हर्ता सुख कर्ता बनो।

❖ **दृढ़ता सम्पन्न तीव्र पुरुषार्थ करो**

⇨ पुरुषार्थ के साथ दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ का अर्थ ही है फिर वापस नहीं आयेगा।

⇨ दृढ़ संकल्पधारी बनो। करना ही है। और उस दृढ़ संकल्प को रोज़ चेक करो किस कारण से फिर दृढ़ता में कमजोरी आई? और उस सरकमस्टांश के ऊपर विशेष अटेन्शन देते रहो कि यह फिर से नहीं आवे। मास्टर सर्वशक्तिवान के सीट पर बैठके उस संकल्प को, संस्कार को समाप्त करो।

⇨ शक्ति समय पर नहीं आती। कारण? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान की सीट पर सेट नहीं होते। उस सीट पर सेट नहीं होते तो आवाहन करते भी शक्ति समय पर नहीं आती।

⇨ इसके लिए बापदादा ने बार-बार कहा है अपने मन को बिजी रखो। कभी किस शक्ति को सारे दिन में इमर्ज रखो। कभी किसी शक्ति को इमर्ज करके देखो कि उसकी ताकत क्या है? ऐसे अनुभव करते रहेंगे, अपनी सीट पर सेट रहेंगे तो शक्ति आपके आगे जी हाजिर होगी। आपकी शक्ति है ना!

❖ **दृढ़ता अर्थात् सफलता**

⇨ बापदादा तो बहुत समय से अचानक की वारनिंग दे रहे हैं इसलिए अभी बापदादा हर बच्चे को एक स्वमान देते हैं - हर बच्चा दृढ़ संकल्पधारी विशेष आत्मा बनो। संकल्प किया और हुआ, इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प।

होमवर्क - 2012

❖ पूर्वज की स्मृति रख रहमदिल वनो

⇨ समय आगे बढ़ रहा है, अति में जा रहा है, तो समय का परिवर्तन करने वाले क्या आप पूर्वजों को अपने दु:खी परिवार पर रहम नहीं आता? रहमदिल बनो। दु:खियों को सुख का रास्ता बताओ, चाहे मन्सा से, चाहे वाचा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से। अपना परिवार है ना! तो परिवार का दु:ख मिटाना है। रहमदिल बनो। अच्छा।

होमवर्क :- 15.12.2011

❖ वेफिक्र वादशाह

⇨ सभी बच्चों ने अपने फिकर बाप को देकर बाप से फखुर ले लिया है।

⇨ आप भी हर एक सवेरे से उठते कर्म करते भी बेफिक्र और बादशाह बन चलते हो ना! यह बेफिक्र का जीवन कितना प्यारा लगता है।

⇨ बेफिक्र की निशानी क्या दिखाई देती है? हर एक के मस्तक में लाइट, आत्मा चमकती हुई दिखाई देती है।

⇨ यह बेफिक्र जीवन कैसे बनी? बाप ने सभी बच्चों के जीवन से फिकर लेकर फखुर दे दिया है।

⇨ अगर कोई बोझ भी आता है तो बोझ अर्थात् फिकर बाप को देकर फखुर ले सकते हैं।

⇨ आप सबको बेफिक्र लाइफ पसन्द है ना! देखने वाले भी बेफिक्र लाइफ पसन्द करते हैं।

⇨ बापदादा हर बच्चे को बेफिक्र बादशाह देखने चाहते हैं।

⇨ बेफिक्र बादशाह बनने की बहुत सहज विधि है जो भी थोड़ा बहुत फिकर आता है तो मेरे को तेरे में बदल लो। यह हद के मेरेपन को, मेरे को तेरे में बदलने की बहुत सहज विधि है - संकल्प कर लिया सब तेरा और मेरा क्या

10

होमवर्क - 2012

हो जायेगा। तो बापदादा जब चक्र लगाके चारों ओर देश विदेश के अज्ञानी बच्चों को देखते हैं तो तरस आता है इसलिए आप सब भी अब दु:ख हर्ता सुख कर्ता बनो।

❖ दृढ़ता सम्पन्न तीव्र पुरुषार्थ करो

⇨ पुरुषार्थ के साथ दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ का अर्थ ही है फिर वापस नहीं आयेगा।

⇨ दृढ़ संकल्पधारी बनो। करना ही है। और उस दृढ़ संकल्प को रोज़ चेक करो किस कारण से फिर दृढ़ता में कमजोरी आई? और उस सरकमस्टांश के ऊपर विशेष अटेन्शन देते रहो कि यह फिर से नहीं आवे। मास्टर सर्वशक्तिवान के सीट पर बैठके उस संकल्प को, संस्कार को समाप्त करो।

⇨ शक्ति समय पर नहीं आती। कारण? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान की सीट पर सेट नहीं होते। उस सीट पर सेट नहीं होते तो आवाहन करते भी शक्ति समय पर नहीं आती।

⇨ इसके लिए बापदादा ने बार-बार कहा है अपने मन को बिजी रखो। कभी किस शक्ति को सारे दिन में इमर्ज रखो। कभी किसी शक्ति को इमर्ज करके देखो कि उसकी ताकत क्या है? ऐसे अनुभव करते रहेंगे, अपनी सीट पर सेट रहेंगे तो शक्ति आपके आगे जी हाजिर होगी। आपकी शक्ति है ना!

❖ दृढ़ता अर्थात् सफलता

⇨ बापदादा तो बहुत समय से अचानक की वारनिंग दे रहे हैं इसलिए अभी बापदादा हर बच्चे को एक स्वमान देते हैं - हर बच्चा दृढ़ संकल्पधारी विशेष आत्मा बनो। संकल्प किया और हुआ, इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प।

27

हाथ हैं, पांव हैं अपने कन्ट्रोल में रहते हैं ऐसे मन बुद्धि संस्कार जब चाहे जैसे चाहे रूलिंग पावर और कन्ट्रोलिंग पावर हो।

⇨ बापदादा समय की सूचना भी समय प्रति समय देते रहे हैं, अब समय प्रमाण हर एक बच्चे को विश्व कल्याणी स्वरूप को प्रत्यक्ष करने का समय है। चारों ओर दु:ख अशान्ति बढ़ रही है। आपके भाई आपकी बहिनें, परिवार दु:खी हो रहे हैं तो आपको अपने परिवार पर रहम नहीं आता!

⇨ अभी बापदादा यही इशारा दे रहे हैं स्व पुरुषार्थ के साथ विश्व सेवा का। अभी मन्सा सेवा की भी आवश्यकता है क्योंकि सभी तरफ विश्व कल्याणकारी बनना है उसमें मन्सा वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे से तीनों ही सेवा की अभी आवश्यकता है। रोज़ चेक करो तीनों सेवाओं में कितनी परसेन्ट सेवा की?

⇨ अभी मन्सा सूक्ष्म वायब्रेशन्स द्वारा आत्माओं के दु:ख अशान्ति का सहारा बनना पड़े। क्या आपको तरस नहीं आता? अभी हर बच्चे को सिर्फ सेन्टर कल्याणी नहीं, ज़ोन कल्याणी नहीं विश्व कल्याणी बनना है।

⇨ बापदादा अभी यही अटेन्शन दिला रहे हैं अपने भक्तों का कल्याणकारी बनो क्योंकि यह संगमयुग का बहुत बड़ा महत्व है। अभी संगमयुग में जो चाहे जितना चाहे उतना बाप से सहयोग मिल सकता है। मन्सा सेवा को बढ़ाओ।

⇨ अपने कार्य के प्रमाण जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल का टाइम फिक्स किया हुआ है ऐसे ही हर एक को मन्सा सेवा का भी टाइम फिक्स करना चाहिए। जब ज्यादा दु:ख होगा उस समय सभी का अटेन्शन उस हलचल में होगा लेकिन अभी मन्सा सेवा का समय है इसलिए हर बच्चे को अपने विश्व कल्याणी का स्वरूप इमर्ज करना है।

⇨ विश्व कल्याण में स्व कल्याण स्वत: और सहज हो जायेगा क्योंकि अगर मन फ्री है तो व्यर्थ आता है लेकिन मन बिजी होगा तो व्यर्थ सहज ही समाप्त

रहा? मेरा बाबा।

⇨ बापदादा ने तीन तख्त के मालिक बनाया है। एक तख्त भ्रकुटी का, यह तो सबको है ही। दूसरा तख्त है बापदादा का दिलतख्त और तीसरा है विश्व का तख्त, राज्य का तख्त। सबसे श्रेष्ठ है बापदादा का दिलतख्त।

⇨ बापदादा के दिलतख्त पर कौन बैठता है? जिसने सदा स्वयं भी बापदादा को अपने दिलतख्त में बिठाया है, जो सदा श्रेष्ठ स्थिति में मास्टर सर्वशक्तिवान है।

❖ समय का इशारा - व्यर्थ संकल्प मुक्त वन दु:खियों पर रहम करो

⇨ बापदादा सभी बच्चों को समय का ईशारा दे रहे हैं। अचानक का पाठ पक्का करा रहे हैं, इसके लिए इस संगम के समय का बहुत-बहुत महत्व रखना है क्योंकि इस एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनानी है।

⇨ संगम के समय में दो बातों का हर समय अटेन्शन देना है - समय और संकल्प। बापदादा को सभी ने व्यर्थ संकल्प, संकल्प द्वारा देने की हिम्मत रखी है। तो चेक करो हिम्मत सदा कायम है? क्योंकि हिम्मते बच्चे, एक बार तो बाप हजार बार मददगार है।

⇨ व्यर्थ संकल्पों में समय बहुत जाता है और आपका इस समय के प्रमाण कार्य है विश्व की आत्माओं को सन्देश देने का। तो व्यर्थ संकल्प को समाप्त करना है तब दु:खी, अशान्त आत्माओं को सुख शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। बापदादा को दु:खी बच्चों को देख तरस पड़ता है। आपको भी अपने भाई-बहिनों को देख तरस तो पड़ता है ना!

❖ तीव्र पुरुषार्थ - सेकण्ड में बिन्दी लगाओ

⇨ बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि अभी समय अनुसार तीव्र पुरूषार्थी बनने की आवश्यकता है। तीव्र पुरुषार्थी बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ है सेकण्ड में बिन्दी लगाना। सेकण्ड और बिन्दी, दोनों समान।

होमवर्क - 2012

हाथ हैं, पांव हैं अपने कन्ट्रोल में रहते हैं ऐसे मन बुद्धि संस्कार जब चाहे जैसे चाहे रूलिंग पावर और कन्ट्रोलिंग पावर हो।

⇨ बापदादा समय की सूचना भी समय प्रति समय देते रहे हैं, अब समय प्रमाण हर एक बच्चे को विश्व कल्याणी स्वरूप को प्रत्यक्ष करने का समय है। चारों ओर दु:ख अशान्ति बढ़ रही है। आपके भाई आपकी बहिनें, परिवार दु:खी हो रहे हैं तो आपको अपने परिवार पर रहम नहीं आता!

⇨ अभी बापदादा यही इशारा दे रहे हैं स्व पुरुषार्थ के साथ विश्व सेवा का। अभी मन्सा सेवा की भी आवश्यकता है क्योंकि सभी तरफ विश्व कल्याणकारी बनना है उसमें मन्सा वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे से तीनों ही सेवा की अभी आवश्यकता है। रोज़ चेक करो तीनों सेवाओं में कितनी परसेन्ट सेवा की?

⇨ अभी मन्सा सूक्ष्म वायब्रेशन्स द्वारा आत्माओं के दु:ख अशान्ति का सहारा बनना पड़े। क्या आपको तरस नहीं आता? अभी हर बच्चे को सिर्फ सेन्टर कल्याणी नहीं, ज़ोन कल्याणी नहीं विश्व कल्याणी बनना है।

⇨ बापदादा अभी यही अटेन्शन दिला रहे हैं अपने भक्तों का कल्याणकारी बनो क्योंकि यह संगमयुग का बहुत बड़ा महत्व है। अभी संगमयुग में जो चाहे जितना चाहे उतना बाप से सहयोग मिल सकता है। मन्सा सेवा को बढ़ाओ।

⇨ अपने कार्य के प्रमाण जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल का टाइम फिक्स किया हुआ है ऐसे ही हर एक को मन्सा सेवा का भी टाइम फिक्स करना चाहिए। जब ज्यादा दु:ख होगा उस समय सभी का अटेन्शन उस हलचल में होगा लेकिन अभी मन्सा सेवा का समय है इसलिए हर बच्चे को अपने विश्व कल्याणी का स्वरूप इमर्ज करना है।

⇨ विश्व कल्याण में स्व कल्याण स्वत: और सहज हो जायेगा क्योंकि अगर मन फ्री है तो व्यर्थ आता है लेकिन मन बिजी होगा तो व्यर्थ सहज ही समाप्त

26

होमवर्क - 2012

रहा? मेरा बाबा।

⇨ बापदादा ने तीन तख्त के मालिक बनाया है। एक तख्त भ्रकुटी का, यह तो सबको है ही। दूसरा तख्त है बापदादा का दिलतख्त और तीसरा है विश्व का तख्त, राज्य का तख्त। सबसे श्रेष्ठ है बापदादा का दिलतख्त।

⇨ बापदादा के दिलतख्त पर कौन बैठता है? जिसने सदा स्वयं भी बापदादा को अपने दिलतख्त में बिठाया है, जो सदा श्रेष्ठ स्थिति में मास्टर सर्वशक्तिवान है।

❖ समय का इशारा - व्यर्थ संकल्प मुक्त वन दु:खियों पर रहम करो

⇨ बापदादा सभी बच्चों को समय का ईशारा दे रहे हैं। अचानक का पाठ पक्का करा रहे हैं, इसके लिए इस संगम के समय का बहुत-बहुत महत्व रखना है क्योंकि इस एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनानी है।

⇨ संगम के समय में दो बातों का हर समय अटेन्शन देना है - समय और संकल्प। बापदादा को सभी ने व्यर्थ संकल्प, संकल्प द्वारा देने की हिम्मत रखी है। तो चेक करो हिम्मत सदा कायम है? क्योंकि हिम्मते बच्चे, एक बार तो बाप हजार बार मददगार है।

⇨ व्यर्थ संकल्पों में समय बहुत जाता है और आपका इस समय के प्रमाण कार्य है विश्व की आत्माओं को सन्देश देने का। तो व्यर्थ संकल्प को समाप्त करना है तब दु:खी, अशान्त आत्माओं को सुख शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। बापदादा को दु:खी बच्चों को देख तरस पड़ता है। आपको भी अपने भाई-बहिनों को देख तरस तो पड़ता है ना!

❖ तीव्र पुरुषार्थ - सेकण्ड में बिन्दी लगाओ

⇨ बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि अभी समय अनुसार तीव्र पुरूषार्थी बनने की आवश्यकता है। तीव्र पुरुषार्थी बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ है सेकण्ड में बिन्दी लगाना। सेकण्ड और बिन्दी, दोनों समान।

11

❖ **गुरुवार का दिन मनाने की विधि**

⇨ गुरूवार के दिन वरदान का दिन विशेष है, इस रूप से गुरूवार को मनाओ। कोई न कोई विशेष वरदान अमृतवेले से अपने बुद्धि में इमर्ज रखो। वरदान तो अनेक हैं लेकिन विशेष एक वरदान अपने लिए बुद्धि में रख चेक करो कि वरदानी दिन में वरदान स्वरूप बन, वरदान को रिपीट नहीं करना है लेकिन वरदान स्वरूप बनना है और चेक करते रहो तो आज कितना समय वरदान स्वरूप रहे?

❖ **सण्डे कैसे मनाओ?**

⇨ सण्डे का दिन विशेष दुनिया में छुट्टी का दिन होता है। तो सण्डे के दिन मनाओ जो भी कुछ अपने जीवन में संकल्प मात्र भी कमजोरी हो, स्वप्न मात्र भी कमजोरी हो उसको छुट्टी देना है।

❖ **बापदादा के साथ चलने की तेयारी**

⇨ बापदादा ने सभी बच्चों को साथ ले चलने का वायदा किया है। इसके लिए साथ चलने की तैयारी क्या करनी है? सेकण्ड में बिन्दी लगाई, सम्पन्न और सम्पूर्ण बन चला। तो चेक करो समय तो अचानक आना है, तो इतनी तैयारी है जो साथ में चलें?

❖ **पहली बार आने वालों से :-**

⇨ लास्ट समय के पहले पहुंच गये हो। लास्ट सो फास्ट जाने का चांस है।

⇨ अब तीव्र पुरुषार्थ कर आगे से भी आगे जाने का दृढ़ संकल्प करो। दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ता को कभी भी हल्का नहीं करना। दृढ़ता आपको सदा सहज आगे बढ़ाती रहेगी।

होमवर्क :- 05.03.2012

❖ **संगम का समय और भाग्य की रेखायें :-**

⇨ मस्तक में चमकते हुए सितारे की रेखा, नयनों में स्नेह और शक्ति की रेखा, होठों में मुस्कान की रेखा, पांव में हर कदम में पदम की रेखा हैं। अपने भाग्य को देख सदा ऐसे ही हर्षित रहो।

⇨ यह भाग्य अब संगमयुग में ही मिलता है। संगमयुग के हर घड़ी की बहुत बड़ी वैल्यु है।

⇨ संगमयुग की एक घड़ी अविनाशी हो जाती है क्योंकि हर घड़ी का 21 जन्मों के साथ सम्बन्ध है। चेक करो एक घड़ी अगर व्यर्थ गई तो एक जन्म की बात नहीं 21 जन्म के सम्बन्ध की बात है।

⇨ बापदादा बच्चों को अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि संगमयुग की एक घड़ी को भी, एक संकल्प को भी व्यर्थ नहीं गवाओ क्योंकि एक जन्म व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन 21 जन्म में व्यर्थ गंवाया। संगमयुग का महत्व हर समय याद रखो।

⇨ संगमयुग के महत्व को अगर सदा बुद्धि में याद रखो कि अविनाशी बाप द्वारा यह कार्य मिला है। हर घड़ी अविनाशी बनने की है क्योंकि अविनाशी बाप ने यह वरदान दिया है। तो सहज ही हो जायेगा।

⇨ बाप ने सुनाया कि हर एक ब्राह्मण बच्चे के कदम में पदम की रेखा है। सोचो कदम में पदम की रेखा तो कितने पदमों के लिए संगमयुग पर गोल्डन चांस है। हर एक को यह अपना भाग्य स्मृति में रखना है।

❖ **स्वराज्य अधिकारी वन विश्वकल्याणकारी स्वरूप प्रत्यक्ष करो**

⇨ स्वराज्य अधिकारी अर्थात् मन-बुद्धि संस्कार को अपने कन्ट्रोल में चलाने वाला। जब चाहे जैसे चाहे वैसे अधिकार में रहे। जैसे यह स्थूल कर्मेन्द्रियां

होमवर्क - 2012

❖ गुरुवार का दिन मनाने की विधि

⇨ गुरूवार के दिन वरदान का दिन विशेष है, इस रूप से गुरूवार को मनाओ। कोई न कोई विशेष वरदान अमृतवेले से अपने बुद्धि में इमर्ज रखो। वरदान तो अनेक हैं लेकिन विशेष एक वरदान अपने लिए बुद्धि में रख चेक करो कि वरदानी दिन में वरदान स्वरूप बन, वरदान को रिपीट नहीं करना है लेकिन वरदान स्वरूप बनना है और चेक करते रहो तो आज कितना समय वरदान स्वरूप रहे?

❖ सण्डे कैसे मनाओ?

⇨ सण्डे का दिन विशेष दुनिया में छुट्टी का दिन होता है। तो सण्डे के दिन मनाओ जो भी कुछ अपने जीवन में संकल्प मात्र भी कमजोरी हो, स्वप्न मात्र भी कमजोरी हो उसको छुट्टी देना है।

❖ बापदादा के साथ चलने की तेयारी

⇨ बापदादा ने सभी बच्चों को साथ ले चलने का वायदा किया है। इसके लिए साथ चलने की तैयारी क्या करनी है? सेकण्ड में बिन्दी लगाई, सम्पन्न और सम्पूर्ण बन चला। तो चेक करो समय तो अचानक आना है, तो इतनी तैयारी है जो साथ में चलें?

❖ पहली बार आने वालों से :-

⇨ लास्ट समय के पहले पहुंच गये हो। लास्ट सो फास्ट जाने का चांस है।

⇨ अब तीव्र पुरुषार्थ कर आगे से भी आगे जाने का दृढ़ संकल्प करो। दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ता को कभी भी हल्का नहीं करना। दृढ़ता आपको सदा सहज आगे बढ़ाती रहेगी।

12

होमवर्क - 2012

होमवर्क :- 05.03.2012

❖ संगम का समय और भाग्य की रेखायें :-

⇨ मस्तक में चमकते हुए सितारे की रेखा, नयनों में स्नेह और शक्ति की रेखा, होठों में मुस्कान की रेखा, पांव में हर कदम में पदम की रेखा हैं। अपने भाग्य को देख सदा ऐसे ही हर्षित रहो।

⇨ यह भाग्य अब संगमयुग में ही मिलता है। संगमयुग के हर घड़ी की बहुत बड़ी वैल्यु है।

⇨ संगमयुग की एक घड़ी अविनाशी हो जाती है क्योंकि हर घड़ी का 21 जन्मों के साथ सम्बन्ध है। चेक करो एक घड़ी अगर व्यर्थ गई तो एक जन्म की बात नहीं 21 जन्म के सम्बन्ध की बात है।

⇨ बापदादा बच्चों को अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि संगमयुग की एक घड़ी को भी, एक संकल्प को भी व्यर्थ नहीं गवाओ क्योंकि एक जन्म व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन 21 जन्म में व्यर्थ गंवाया। संगमयुग का महत्व हर समय याद रखो।

⇨ संगमयुग के महत्व को अगर सदा बुद्धि में याद रखो कि अविनाशी बाप द्वारा यह कार्य मिला है। हर घड़ी अविनाशी बनने की है क्योंकि अविनाशी बाप ने यह वरदान दिया है। तो सहज ही हो जायेगा।

⇨ बाप ने सुनाया कि हर एक ब्राह्मण बच्चे के कदम में पदम की रेखा है। सोचो कदम में पदम की रेखा तो कितने पदमों के लिए संगमयुग पर गोल्डन चांस है। हर एक को यह अपना भाग्य स्मृति में रखना है।

❖ स्वराज्य अधिकारी वन विश्वकल्याणकारी स्वरूप प्रत्यक्ष करो

⇨ स्वराज्य अधिकारी अर्थात् मन-बुद्धि संस्कार को अपने कन्ट्रोल में चलाने वाला। जब चाहे जैसे चाहे वैसे अधिकार में रहे। जैसे यह स्थूल कर्मेन्द्रियां

25

⇨ यह माया के जो शब्द हैं ना! क्या, क्यों, कब, कैसे... यह समाप्त हो जाएं तब चेहरा और चलन सेवा करेंगे।

⇨ अभी समय प्रमाण आपकी ज्यादा सेवा चेहरे और चलन से होगी उसका अभ्यास करो। अभी चेहरे और चलन से किसी को खुशी का वरदान दो, यह अभ्यास करो क्योंकि समय कम मिलेगा इसलिए समय और संकल्प का महत्व रखते हुए आगे बढ़ते जाओ। होना सब अचानक है।

⇨ अब यह संकल्प करो, दृढ़ता से व्यर्थ समय और संकल्प को समाप्त करना है। अगर आपका व्यर्थ समय और संकल्प बच गया तो आपका दिन कैसे बीतेगा? सदा खुशनसीब और खुशनुमा बन जायेंगे।

⇨ अभी संकल्प को अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह रोज़ स्मृति में लाना और सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना। आप अपना टाइम फिक्स करो। बीच-बीच में चेक करो।

⇨ दृढ़ता की सौगात आज के दिन की बापदादा हर बच्चे को दे रहे हैं। शुभ कार्य दृढ़ता से सफल करो।

❖ **पहले वारी वालों से :-**

⇨ यह संकल्प करो दृढ़, साधारण संकल्प नहीं, दृढ़ संकल्प करो कि तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। तीव्र, साधारण नहीं। तो आने वाले अपने राज्य में आ जायेंगे इसलिए साधारण संकल्प का समय पूरा हुआ। अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है, चांस है, फिर भी चांस लेने वाले चांसलर तो बन गये।

होमवर्क :- 31.12.2011

❖ **अपने प्रति प्लैन बनाओ - व्यर्थ भाव और भावना को समाप्त करो**

⇨ बापदादा हर बच्चे के लिए यही शुभ भावना रखते हैं कि हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जाये। अब तो समय भी साथ दे रहा है। तो हर एक ने अपने मन में अपने प्रति नया प्लैन बनाया है ना! कुछ छोड़ना है और कुछ आगे बढ़ना है। तो छोड़ना क्या है?

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा अपना निज़ी संस्कार का संस्कार कर ले।

⇨ अपने लिए कोई प्लैन भी सोचा है? इसके लिए सबसे अच्छी बात है दृढ़ संकल्प। संकल्प है, होना चाहिए लेकिन संकल्प में तीव्रता चाहिए।

⇨ जैसे ब्राह्मण बनने के साथ-साथ यह प्रतिज्ञा की कि कोई भी अशुद्ध भोजन स्वीकार नहीं करना है। तो जैसे तन के लिए अशुद्ध भोजन का संकल्प किया और प्रैक्टिकल कर रहे हो, ऐसे ही मन के लिए यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी के प्रति भी किसी भी सरकमस्टांश प्रमाण कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी ही है।

⇨ मन का भोजन है संकल्प। हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह और सहयोग अपने मन में नहीं रख सकते हैं? किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई भी व्यर्थ है, व्यर्थ भावना वा व्यर्थ भाव - उसको समाप्त करो।

❖ **समय का अटेन्शन और तीव्र पुरुषार्थ**

⇨ समय का अटेन्शन रखो, यह सोचो कि सभी को इस संगम समय में भविष्य बहुत समय की सफलता प्राप्त करनी है। 21 जन्म का वर्सा लेना है। तो कहाँ यह एक जन्म और कहाँ 21 जन्म। तो इस एक जन्म में भी काफी समय

होमवर्क - 2012

⇨ यह माया के जो शब्द हैं ना! क्या, क्यों, कब, कैसे... यह समाप्त हो जाएं तब चेहरा और चलन सेवा करेंगे।

⇨ अभी समय प्रमाण आपकी ज्यादा सेवा चेहरे और चलन से होगी उसका अभ्यास करो। अभी चेहरे और चलन से किसी को खुशी का वरदान दो, यह अभ्यास करो क्योंकि समय कम मिलेगा इसलिए समय और संकल्प का महत्व रखते हुए आगे बढ़ते जाओ। होना सब अचानक है।

⇨ अब यह संकल्प करो, दृढ़ता से व्यर्थ समय और संकल्प को समाप्त करना है। अगर आपका व्यर्थ समय और संकल्प बच गया तो आपका दिन कैसे बीतेगा? सदा खुशनसीब और खुशनुमा बन जायेंगे।

⇨ अभी संकल्प को अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह रोज़ स्मृति में लाना और सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना। आप अपना टाइम फिक्स करो। बीच-बीच में चेक करो।

⇨ दृढ़ता की सौगात आज के दिन की बापदादा हर बच्चे को दे रहे हैं। शुभ कार्य दृढ़ता से सफल करो।

❖ **पहले वारी वालों से :-**

⇨ यह संकल्प करो दृढ़, साधारण संकल्प नहीं, दृढ़ संकल्प करो कि तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। तीव्र, साधारण नहीं। तो आने वाले अपने राज्य में आ जायेंगे इसलिए साधारण संकल्प का समय पूरा हुआ। अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है, चांस है, फिर भी चांस लेने वाले चांसलर तो बन गये।

24

होमवर्क - 2012

होमवर्क :- 31.12.2011

❖ **अपने प्रति प्लैन बनाओ - व्यर्थ भाव और भावना को समाप्त करो**

⇨ बापदादा हर बच्चे के लिए यही शुभ भावना रखते हैं कि हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जाये। अब तो समय भी साथ दे रहा है। तो हर एक ने अपने मन में अपने प्रति नया प्लैन बनाया है ना! कुछ छोड़ना है और कुछ आगे बढ़ना है। तो छोड़ना क्या है?

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा अपना निज़ी संस्कार का संस्कार कर ले।

⇨ अपने लिए कोई प्लैन भी सोचा है? इसके लिए सबसे अच्छी बात है दृढ़ संकल्प। संकल्प है, होना चाहिए लेकिन संकल्प में तीव्रता चाहिए।

⇨ जैसे ब्राह्मण बनने के साथ-साथ यह प्रतिज्ञा की कि कोई भी अशुद्ध भोजन स्वीकार नहीं करना है। तो जैसे तन के लिए अशुद्ध भोजन का संकल्प किया और प्रैक्टिकल कर रहे हो, ऐसे ही मन के लिए यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी के प्रति भी किसी भी सरकमस्टांश प्रमाण कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी ही है।

⇨ मन का भोजन है संकल्प। हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह और सहयोग अपने मन में नहीं रख सकते हैं? किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई भी व्यर्थ है, व्यर्थ भावना वा व्यर्थ भाव - उसको समाप्त करो।

❖ **समय का अटेन्शन और तीव्र पुरुषार्थ**

⇨ समय का अटेन्शन रखो, यह सोचो कि सभी को इस संगम समय में भविष्य बहुत समय की सफलता प्राप्त करनी है। 21 जन्म का वर्सा लेना है। तो कहाँ यह एक जन्म और कहाँ 21 जन्म। तो इस एक जन्म में भी काफी समय

13

अपना पुरुषार्थ तीव्र करना पड़े तभी बहुत समय की जो प्राप्ति हो सके।

❖ **ज्वालामुखी योग**

⇨ अभी समय दिनप्रतिदिन नाजुक आना ही है। ऐसे समय पर अभी ज्वालामुखी योग चाहिए। वह ज्वालामुखी योग की अभी आवश्यकता है।

⇨ ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट माइट स्वरूप शक्तिशाली।

⇨ समय प्रमाण अभी दु:ख, अशान्ति, हलचल बढ़नी ही है इसलिए अपने दु:खी, परेशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियां देने की आवश्यकता पड़ेगी। दु:ख अशान्ति के रिटर्न में कुछ न कुछ शक्ति, शान्ति अपने मन्सा सेवा द्वारा देनी पड़ेगी।

⇨ बापदादा विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि अभी ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी संस्कार रहे हुए हैं वह भी भस्म होने हैं।

⇨ ज्वालामुखी योग की बहुत आवश्यकता है, चाहे औरों को शक्ति देने के लिए, चाहे अपने ब्राह्मण परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए।

⇨ अभी समय को समीप लाने वाले आप निमित्त हो इसलिए विशेष क्या करेंगे? एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक सेन्टर, सेवास्थान ज्वालामुखी योग का वायब्रेशन और कर्म में एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक को आप अटेन्शन में रखते जो भी कमी है उसमें सहयोग दो।

⇨ मन्सा द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा करो और अपने सहयोग द्वारा ब्राह्मण साथियों की विशेष सेवा करो।

❖ **स्वयं के वापसमान बनने की डेट फिक्स करो**

⇨ बापदादा ने यह भी कहा कि सभी अपने अन्दर अपने लिए समय निश्चित करो कि कब तक अपने को बाप समान बनायेंगे। अपने अन्दर अपने लिए

होमवर्क :- 19.02.2012

❖ **वेहद की वैराग्य वृत्ति**

⇨ सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए। यही चाबी है गेट खोलने की। बापदादा तो सदा कहते रहते हैं कि बेहद के वैरागी बन वेस्ट संकल्प और वेस्ट समय दोनों को मिलकर जल्दी से जल्दी त्याग करना अर्थात् बेहद के वैरागी बनना।

⇨ सबसे बड़ा विघ्न देह अभिमान है। इस देह अभिमान को त्यागना, चलते-फिरते देही अभिमानी बनना, यही बेहद का वैराग्य है।

⇨ यह देह अभिमान जो 'मैं' के रूप में आता है। एक 'मैं' है कामन, मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है।

⇨ दूसरा महीन मैं, जो सुनाया मैंने यह किया, मैं यह कर सकता हूँ, मैं ही ठीक हूँ, यह महीन 'मैं' इसको खत्म करना है। यह देह अभिमान इस रूप में आता है। यह महीन 'मैं' बाप की विशेषता को भी मेरा मानकर 'मैं' का भान रखते हैं, इसको समाप्त करना।

❖ **दृढ़ता की शक्ति को यूज करो**

⇨ दृढ़ता को यूज़ करो। संकल्प करते हो लेकिन एक है संकल्प करना, दूसरा है दृढ़ संकल्प करना। बार-बार किये हुए संकल्प में दृढ़ता लाना, यह अटेन्शन कम है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। चाबी लगाने में कोई कमी रह जाती है इसीलिए सम्पूर्ण सफलता नहीं मिलती है।

❖ **दृढ़ता द्वारा व्यर्थ समाप्त कर चेहरे और चलन द्वारा सेवा करो**

⇨ अभी से आपके चेहरे पर व्यर्थ की समाप्ति और सदा स्मृति स्वरूप की झलक चेहरे और चलन में आनी चाहिए।

होमवर्क - 2012

अपना पुरुषार्थ तीव्र करना पड़े तभी बहुत समय की जो प्राप्ति हो सके।

❖ ज्वालामुखी योग

⇨ अभी समय दिनप्रतिदिन नाजुक आना ही है। ऐसे समय पर अभी ज्वालामुखी योग चाहिए। वह ज्वालामुखी योग की अभी आवश्यकता है।

⇨ ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट माइट स्वरूप शक्तिशाली।

⇨ समय प्रमाण अभी दु:ख, अशान्ति, हलचल बढ़नी ही है इसलिए अपने दु:खी, परेशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियां देने की आवश्यकता पड़ेगी। दु:ख अशान्ति के रिटर्न में कुछ न कुछ शक्ति, शान्ति अपने मन्सा सेवा द्वारा देनी पड़ेगी।

⇨ बापदादा विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि अभी ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी संस्कार रहे हुए हैं वह भी भस्म होने हैं।

⇨ ज्वालामुखी योग की बहुत आवश्यकता है, चाहे औरों को शक्ति देने के लिए, चाहे अपने ब्राह्मण परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए।

⇨ अभी समय को समीप लाने वाले आप निमित्त हो इसलिए विशेष क्या करेंगे? एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक सेन्टर, सेवास्थान ज्वालामुखी योग का वायब्रेशन और कर्म में एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक को आप अटेन्शन में रखते जो भी कमी है उसमें सहयोग दो।

⇨ मन्सा द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा करो और अपने सहयोग द्वारा ब्राह्मण साथियों की विशेष सेवा करो।

❖ स्वयं के वापसमान बनने की डेट फिक्स करो

⇨ बापदादा ने यह भी कहा कि सभी अपने अन्दर अपने लिए समय निश्चित करो कि कब तक अपने को बाप समान बनायेंगे। अपने अन्दर अपने लिए

14

होमवर्क - 2012

होमवर्क :- 19.02.2012

❖ वेहद की वैराग्य वृत्ति

⇨ सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए। यही चाबी है गेट खोलने की। बापदादा तो सदा कहते रहते हैं कि बेहद के वैरागी बन वेस्ट संकल्प और वेस्ट समय दोनों को मिलकर जल्दी से जल्दी त्याग करना अर्थात् बेहद के वैरागी बनना।

⇨ सबसे बड़ा विघ्न देह अभिमान है। इस देह अभिमान को त्यागना, चलते-फिरते देही अभिमानी बनना, यही बेहद का वैराग्य है।

⇨ यह देह अभिमान जो 'मैं' के रूप में आता है। एक 'मैं' है कामन, मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है।

⇨ दूसरा महीन मैं, जो सुनाया मैंने यह किया, मैं यह कर सकता हूँ, मैं ही ठीक हूँ, यह महीन 'मैं' इसको खत्म करना है। यह देह अभिमान इस रूप में आता है। यह महीन 'मैं' बाप की विशेषता को भी मेरा मानकर 'मैं' का भान रखते हैं, इसको समाप्त करना।

❖ दृढ़ता की शक्ति को यूज करो

⇨ दृढ़ता को यूज़ करो। संकल्प करते हो लेकिन एक है संकल्प करना, दूसरा है दृढ़ संकल्प करना। बार-बार किये हुए संकल्प में दृढ़ता लाना, यह अटेन्शन कम है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। चाबी लगाने में कोई कमी रह जाती है इसीलिए सम्पूर्ण सफलता नहीं मिलती है।

❖ दृढ़ता द्वारा व्यर्थ समाप्त कर चेहरे और चलन द्वारा सेवा करो

⇨ अभी से आपके चेहरे पर व्यर्थ की समाप्ति और सदा स्मृति स्वरूप की झलक चेहरे और चलन में आनी चाहिए।

23

❖ **खुशनुमा चेहरे द्वारा सेवा करो**

⇨ बापदादा चाहता है एक-एक बच्चा ऐसा खुशनुमा, खुशनसीब दिखाई दे। समय प्रमाण अभी आपका चेहरा बहुत सेवा करेगा। आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए बापदादा चाहता है कि अभी से लक्ष्य रखो। उमंग हो चेहरे से सेवा करने का क्योंकि दिनप्रतिदिन समय नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय पर आपका चेहरा आत्माओं को चियरफुल बना दे।

❖ **अनुभव की अथॉरिटी बनो**

⇨ अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़े ते बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना इसको कहा जाता है अनुभव।

⇨ जो स्वरूप की स्मृति रखते हैं उस स्वरूप की अनुभूति में रहना इसकी और आवश्यकता है। अनुभव अपने पुरुषार्थ में भी बहुत मदद करता है। अभी इस अनुभव की अथॉरिटी के अभ्यास के ऊपर और अटेन्शन दो। अनुभव स्वरूप की स्थिति सदा समाई हुई रहती है, उसकी शक्ल, चलन सेवा करती है।

❖ **पहली वार वालों से :-**

⇨ पहले बारी आये हो तो कमाल करो। पहले नम्बर का पुरुषार्थ करो। लास्ट से फास्ट और फर्स्ट होके दिखाओ। हो सकता है, कोई रत्न ऐसे भी निकलने हैं तो आप ही दिखाओ। बापदादा की मदद सभी को है। तीव्र पुरुषार्थ करो। करना ही है, बनना ही है। आगे जाना ही है। यह दृढ़ संकल्प रखो और ऐसे कोई एक्जैम्पुल निकलने भी हैं। अभी आगे से आगे जाके दिखाओ। हम पीछे आये हैं यह नहीं सोचो, आगे जा सकते हो। बापदादा की, ड्रामा की मदद मिलेगी।

निश्चित करो।

⇨ बापदादा हर बच्चे को देख यही वरदान दे रहे हैं तीव्र पुरुषार्थी भव। अमृतवेले जब याद में बैठते हो और जब उठने का समय होता है उस समय बापदादा का यह वरदान अपने दिल में याद रखना तीव्र पुरुषार्थी भव।

⇨ बापदादा ने दो बातें अटेन्शन में दिलाई हैं क्योंकि संगम का समय अचानक समाप्त होना है। एक समय, दूसरा संकल्प, दोनों पर हर घड़ी अटेन्शन।

❖ **फरिश्ता स्वरूप अनुभव में लाओ**

⇨ बापदादा की यह भी हर बच्चे के प्रति शुभ भावना है कि जो भी आपके चेहरे में देखे आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे। फलानी हूँ, फलाना हूँ नहीं। फरिश्ता अनुभव में आवे।

⇨ इसके लिए ज्वालामुखी योग, कोई व्यर्थ नहीं। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। समर्थ फरिश्ता नज़र आये।

⇨ लक्ष्य रखो मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। तो अमृतवेले अपनी दिनचर्या में यह याद रखना मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। चलते फिरते फरिश्ता रूप।

⇨ होमवर्क क्या रहा? फरिश्ता स्वरूप में रहना है, इसको ही कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ।

⇨ बापदादा व्याहते हैं - एक-एक बच्चा बाप समान दिखाई दे। फालो ब्रह्मा बाप। सरकमस्टांश, बातें सब कुछ बाप के आगे आई लेकिन फरिश्ता बन गये।

⇨ फरिश्ता बनना ही है यह दृढ़ संकल्प हर एक अपने आपसे करे क्योंकि अपने आपसे करेंगे तो अटेन्शन रहेगा। मुझे बनना है बस। और आपके बनने से नेचरल वायब्रेशन फैलेगा।

⇨ बापदादा ने जो होमवर्क दिया, वह करके सभी बापदादा को फरिश्ता रूप दिखाना। अभी दृढ़ निश्चय करो, मैं कौन? मैं फरिश्ता, मैं फरिश्ता, मैं

होमवर्क - 2012

❖ खुशनुमा चेहरे द्वारा सेवा करो

⇨ बापदादा चाहता है एक-एक बच्चा ऐसा खुशनुमा, खुशनसीब दिखाई दे। समय प्रमाण अभी आपका चेहरा बहुत सेवा करेगा। आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए बापदादा चाहता है कि अभी से लक्ष्य रखो। उमंग हो चेहरे से सेवा करने का क्योंकि दिनप्रतिदिन समय नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय पर आपका चेहरा आत्माओं को चियरफुल बना दे।

❖ अनुभव की अथॉरिटी बनो

⇨ अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़े ते बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना इसको कहा जाता है अनुभव।

⇨ जो स्वरूप की स्मृति रखते हैं उस स्वरूप की अनुभूति में रहना इसकी और आवश्यकता है। अनुभव अपने पुरुषार्थ में भी बहुत मदद करता है। अभी इस अनुभव की अथॉरिटी के अभ्यास के ऊपर और अटेन्शन दो। अनुभव स्वरूप की स्थिति सदा समाई हुई रहती है, उसकी शक्ल, चलन सेवा करती है।

❖ पहली वार वालों से :-

⇨ पहले बारी आये हो तो कमाल करो। पहले नम्बर का पुरुषार्थ करो। लास्ट से फास्ट और फर्स्ट होके दिखाओ। हो सकता है, कोई रत्न ऐसे भी निकलने हैं तो आप ही दिखाओ। बापदादा की मदद सभी को है। तीव्र पुरुषार्थ करो। करना ही है, बनना ही है। आगे जाना ही है। यह दृढ़ संकल्प रखो और ऐसे कोई एक्जैम्पुल निकलने भी हैं। अभी आगे से आगे जाके दिखाओ। हम पीछे आये हैं यह नहीं सोचो, आगे जा सकते हो। बापदादा की, ड्रामा की मदद मिलेगी।

22

होमवर्क - 2012

निश्चित करो।

⇨ बापदादा हर बच्चे को देख यही वरदान दे रहे हैं तीव्र पुरुषार्थी भव। अमृतवेले जब याद में बैठते हो और जब उठने का समय होता है उस समय बापदादा का यह वरदान अपने दिल में याद रखना तीव्र पुरुषार्थी भव।

⇨ बापदादा ने दो बातें अटेन्शन में दिलाई हैं क्योंकि संगम का समय अचानक समाप्त होना है। एक समय, दूसरा संकल्प, दोनों पर हर घड़ी अटेन्शन।

❖ फरिश्ता स्वरूप अनुभव में लाओ

⇨ बापदादा की यह भी हर बच्चे के प्रति शुभ भावना है कि जो भी आपके चेहरे में देखे आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे। फलानी हूँ, फलाना हूँ नहीं। फरिश्ता अनुभव में आवे।

⇨ इसके लिए ज्वालामुखी योग, कोई व्यर्थ नहीं। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। समर्थ फरिश्ता नज़र आये।

⇨ लक्ष्य रखो मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। तो अमृतवेले अपनी दिनचर्या में यह याद रखना मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। चलते फिरते फरिश्ता रूप।

⇨ होमवर्क क्या रहा? फरिश्ता स्वरूप में रहना है, इसको ही कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ।

⇨ बापदादा व्याहते हैं - एक-एक बच्चा बाप समान दिखाई दे। फालो ब्रह्मा बाप। सरकमस्टांश, बातें सब कुछ बाप के आगे आई लेकिन फरिश्ता बन गये।

⇨ फरिश्ता बनना ही है यह दृढ़ संकल्प हर एक अपने आपसे करे क्योंकि अपने आपसे करेंगे तो अटेन्शन रहेगा। मुझे बनना है बस। और आपके बनने से नेचरल वायब्रेशन फैलेगा।

⇨ बापदादा ने जो होमवर्क दिया, वह करके सभी बापदादा को फरिश्ता रूप दिखाना। अभी दृढ़ निश्चय करो, मैं कौन? मैं फरिश्ता, मैं फरिश्ता, मैं

22

15

फरिश्ता हूँ, यही सभी चेहरा और चलन बाप के सामने, विश्व के सामने दिखाना है।

⇨ अमृतवेले योग करने के बाद फिर से याद करने के बाद फिर से याद करना, मैं कौन? मैं फरिश्ता। फरिश्ता हूँ और फरिश्ता रूप से बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण बनूंगा ही।

होमवर्क :- 18.01.2012

❖ **ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनो**

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय द्वारा तीव्र पुरुषार्थ करना है कि अब बाप समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि अभी सभी को बाप के साथ रिटर्न जरनी करनी है।

⇨ ब्रह्मा बाप ने जीवन में ही फरिश्तापन का स्वरूप दिखाया। कितनी जिम्मेवारी रही! इतनी जिम्मेवारी होते भी न्यारा और प्यारा रहा। सदा बेफिक्र बादशाह रहा। ऐसे ही आप बच्चों को भी अभी बाप समान बेफिक्र बादशाह फरिश्ता बनना ही है।

❖ **तीव्र पुरुषार्थी की लहर फैलाओ**

⇨ अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना। एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ।

❖ **समय और संकल्प के वचत की अपने प्रति विधि बनाओ**

⇨ बापदादा यह होमवर्क दे रहा है कि मन के कारण जो संकल्प और समय

⇨ जब भी आप कोई भी शक्ति का आर्डर करते हो, पहले यह देखो स्मृति की सीट पर हैं? स्वमान के सीट पर है?

⇨ स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ तो सर्व शक्तियां आपके पास समय पर बंधी हुई हैं आने के लिए क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप ने आपको मास्टर सर्वशक्तिमान बनाया है। तो इतने पावरफुल स्वमानधारी बन चल रहे हो ना?

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक सारे दिन में यह एक्सरसाइज़ करते रहें। समय निकालो बार-बार यह स्वमान की माला पहनाने से, अनुभव करने से जो बापदादा ने स्वराज्य अधिकारी बनाया है, वह हो नहीं सकता कि स्वमान आपके आर्डर पर नहीं चले। सिर्फ सीट पर सेट रहो।

⇨ नियमित रूप से अपनी दिनचर्या सेट करो। बीच-बीच में यह अपने स्वमान के स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करते हो ऐसे यह स्वमान की स्मृति आदिकाल से रिटर्न जरनी तक की, बीच-बीच में टाइम फिक्स करो। यह चलते फिरते भी कर सकते हो क्योंकि मन को सीट पर बिठाना है।

❖ **ज्वालामुखी योग बढ़ाओ**

⇨ समय की हालतों को देख अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा - उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है।

⇨ एक स्वयं के लिए और दूसरा ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट रूप होने के कारण, माइट रूप होने के कारण उन्हों को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो। समय अनुसार अभी आत्माओं को आपके सहयोग की आवश्यकता है।

⇨ ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो जिससे स्वभाव संस्कार परिवर्तन में सहयोग मिलेगा।

होमवर्क - 2012

फरिश्ता हूँ, यही सभी चेहरा और चलन बाप के सामने, विश्व के सामने दिखाना है।

⇨ अमृतवेले योग करने के बाद फिर से याद करने के बाद फिर से याद करना, मैं कौन? मैं फरिश्ता। फरिश्ता हूँ और फरिश्ता रूप से बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण बनूंगा ही।

होमवर्क :- 18.01.2012

❖ ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनो

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय द्वारा तीव्र पुरुषार्थ करना है कि अब बाप समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि अभी सभी को बाप के साथ रिटर्न जरनी करनी है।

⇨ ब्रह्मा बाप ने जीवन में ही फरिश्तापन का स्वरूप दिखाया। कितनी जिम्मेवारी रही! इतनी जिम्मेवारी होते भी न्यारा और प्यारा रहा। सदा बेफिक्र बादशाह रहा। ऐसे ही आप बच्चों को भी अभी बाप समान बेफिक्र बादशाह फरिश्ता बनना ही है।

❖ तीव्र पुरुषार्थी की लहर फैलाओ

⇨ अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना। एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ।

❖ समय और संकल्प के वचत की अपने प्रति विधि बनाओ

⇨ बापदादा यह होमवर्क दे रहा है कि मन के कारण जो संकल्प और समय

16

होमवर्क - 2012

⇨ जब भी आप कोई भी शक्ति का आर्डर करते हो, पहले यह देखो स्मृति की सीट पर हैं? स्वमान के सीट पर है?

⇨ स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ तो सर्व शक्तियां आपके पास समय पर बंधी हुई हैं आने के लिए क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप ने आपको मास्टर सर्वशक्तिमान बनाया है। तो इतने पावरफुल स्वमानधारी बन चल रहे हो ना?

⇨ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक सारे दिन में यह एक्सरसाइज़ करते रहें। समय निकालो बार-बार यह स्वमान की माला पहनाने से, अनुभव करने से जो बापदादा ने स्वराज्य अधिकारी बनाया है, वह हो नहीं सकता कि स्वमान आपके आर्डर पर नहीं चले। सिर्फ सीट पर सेट रहो।

⇨ नियमित रूप से अपनी दिनचर्या सेट करो। बीच-बीच में यह अपने स्वमान के स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करते हो ऐसे यह स्वमान की स्मृति आदिकाल से रिटर्न जरनी तक की, बीच-बीच में टाइम फिक्स करो। यह चलते फिरते भी कर सकते हो क्योंकि मन को सीट पर बिठाना है।

❖ ज्वालामुखी योग बढ़ाओ

⇨ समय की हालतों को देख अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा - उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है।

⇨ एक स्वयं के लिए और दूसरा ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट रूप होने के कारण, माइट रूप होने के कारण उन्हों को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो। समय अनुसार अभी आत्माओं को आपके सहयोग की आवश्यकता है।

⇨ ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो जिससे स्वभाव संस्कार परिवर्तन में सहयोग मिलेगा।

21

लिस्ट आपके सामने आती है।

⇨ बापदादा ने बच्चों के स्वमानों की माला हर बच्चे को डाली है।

⇨ बापदादा यह ड्रिल करा रहा है।

⇨ याद करो, अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है! चले गये अनादि स्वरूप में? हर एक का स्वमान है एक तो बाप के साथ-साथ है चमकती हुई आत्मा, बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही है।

⇨ सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है। कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। दुःख का नामनिशान नहीं है। प्रकृति कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। देख रहे हो अपना स्वरूप? एक सेकण्ड के लिए अपने देवता स्वरूप में स्थित हो जाओ।

⇨ द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो? कितने सभी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती। चाहे धर्म पितायें आये, चाहे गुरू बनें, नेतायें बनें, अभिनेतायें बनें लेकिन ऐसी कायदे प्रमाण पूजा किसकी नहीं होती। तो अपना स्वमान देखा, अनुभव किया?

⇨ अब आओ संगम में, संगम पर स्वयं भगवान, आपकी जीवन में स्वयं मालिक आप बच्चों में पवित्रता की विशेषता भरता है। जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। और बनाने वाला कौन? स्वयं भगवान। वह तो अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है।

❖ स्वमान की सीट पर सेट रह शक्तियों को कार्य में लगाओ

⇨ वरदान में बाप ने दी फिर भी समय पर नहीं आती है उसका कारण क्या? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान के स्मृति की सीट पर नहीं होते हो।

व्यर्थ जाता है, उसमें टाइम कितना वेस्ट जाता है। इनर्जी कितनी वेस्ट जाती है।

⇨ हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे।

⇨ हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कन्ट्रोल किया? क्योंकि अभी समय के प्रमाण आप सभी को मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की मन्सा सेवा करने का समय होगा। इसके लिए सदा मन के ऊपर अटेन्शन रखना जरूरी है।

❖ स्वराज्य अधिकारी वनने पर अटेन्शन दो

⇨ बापदादा का इशारा है कि डबल राजा बनो। एक स्वराज्य अधिकारी और दूसरा भविष्य राज्य अधिकारी। नोट करना स्वराज्य अधिकारी रहे?

⇨ अभी कर्मातीत बनना है, समय समीप आ रहा है। तो चलते-फिरते स्वराज्य अधिकारी बनना ही है। यह संस्कार आप ब्राह्मण बच्चों के ही हैं। डबल राज्य, स्वराज्य और फिर भविष्य में विश्व राज्य।

⇨ बापदादा बच्चों का रिजल्ट नोट करते हैं तो सदा स्वराज्य अधिकारी इसमें अभी अटेन्शन चाहिए।

❖ मन के मालिक वन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ

⇨ स्नेह है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पावरफुल बनाओ। जो बापदादा ने ज्वालामुखी योग कहा, उसके ऊपर अभी और गहरा अटेन्शन देना।

⇨ पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो। इसमें जितना अटेन्शन देंगे तो अटेन्शन के साथ बापदादा भी एकस्ट्रा आपको सहयोग देगा।

⇨ मन के मालिक, मन को ऐसे चलाओ जैसे पांव और बांह को चलाते हो।

होमवर्क - 2012

लिस्ट आपके सामने आती है।

⇨ बापदादा ने बच्चों के स्वमानों की माला हर बच्चे को डाली है।

⇨ बापदादा यह ड्रिल करा रहा है।

⇨ याद करो, अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है! चले गये अनादि स्वरूप में? हर एक का स्वमान है एक तो बाप के साथ-साथ है चमकती हुई आत्मा, बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही है।

⇨ सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है। कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। दुःख का नामनिशान नहीं है। प्रकृति कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। देख रहे हो अपना स्वरूप? एक सेकण्ड के लिए अपने देवता स्वरूप में स्थित हो जाओ।

⇨ द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो? कितने सभी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती। चाहे धर्म पितायें आये, चाहे गुरू बनें, नेतायें बनें, अभिनेतायें बनें लेकिन ऐसी कायदे प्रमाण पूजा किसकी नहीं होती। तो अपना स्वमान देखा, अनुभव किया?

⇨ अब आओ संगम में, संगम पर स्वयं भगवान, आपकी जीवन में स्वयं मालिक आप बच्चों में पवित्रता की विशेषता भरता है। जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। और बनाने वाला कौन? स्वयं भगवान। वह तो अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है।

❖ स्वमान की सीट पर सेट रह शक्तियों को कार्य में लगाओ

⇨ वरदान में बाप ने दी फिर भी समय पर नहीं आती है उसका कारण क्या? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान के स्मृति की सीट पर नहीं होते हो।

20

होमवर्क - 2012

व्यर्थ जाता है, उसमें टाइम कितना वेस्ट जाता है। इनर्जी कितनी वेस्ट जाती है।

⇨ हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे।

⇨ हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कन्ट्रोल किया? क्योंकि अभी समय के प्रमाण आप सभी को मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की मन्सा सेवा करने का समय होगा। इसके लिए सदा मन के ऊपर अटेन्शन रखना जरूरी है।

❖ स्वराज्य अधिकारी वनने पर अटेन्शन दो

⇨ बापदादा का इशारा है कि डबल राजा बनो। एक स्वराज्य अधिकारी और दूसरा भविष्य राज्य अधिकारी। नोट करना स्वराज्य अधिकारी रहे?

⇨ अभी कर्मातीत बनना है, समय समीप आ रहा है। तो चलते-फिरते स्वराज्य अधिकारी बनना ही है। यह संस्कार आप ब्राह्मण बच्चों के ही हैं। डबल राज्य, स्वराज्य और फिर भविष्य में विश्व राज्य।

⇨ बापदादा बच्चों का रिजल्ट नोट करते हैं तो सदा स्वराज्य अधिकारी इसमें अभी अटेन्शन चाहिए।

❖ मन के मालिक वन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ

⇨ स्नेह है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पावरफुल बनाओ। जो बापदादा ने ज्वालामुखी योग कहा, उसके ऊपर अभी और गहरा अटेन्शन देना।

⇨ पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो। इसमें जितना अटेन्शन देंगे तो अटेन्शन के साथ बापदादा भी एकस्ट्रा आपको सहयोग देगा।

⇨ मन के मालिक, मन को ऐसे चलाओ जैसे पांव और बांह को चलाते हो।

17

ऐसे माइन्ड कन्ट्रोल, जो चाहे वही मन संकल्प करे। रोज़ रात को रिजल्ट देखो आज मन की रूलिंग पावर, कन्ट्रोलिंग पावर कहाँ तक रही?

⇨ अभी व्यर्थ को समाप्त जल्दी-जल्दी करना चाहिए अब समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ।

⇨ जो बापदादा ने कहा है पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द लगाओ। वायुमण्डल बनाओ। एक दो के सहयोगी बन हर एक अपने-अपने स्थान को शक्तिशाली बनाओ, साथियों को शक्तिशाली बनाओ। कर्मयोगी की स्थिति उसमें अटेन्शन ज्यादा चाहिए।

❖ **पहली वार वालों से :-**

⇨ लास्ट समाप्ति के समय से तो पहले आ गये हैं। लेकिन जितना लेट आये हो इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा क्योंकि इस थोड़े टाइम में आपको पूरे 21 जन्मों का भविष्य बनाना है। इतना अटेन्शन रखना पड़ेगा। समय को बचाना, सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना। तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है।

❖ **टीचर्स प्रति :-**

⇨ टीचर्स बापदादा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनी हुई हैं।

⇨ टीचर्स माना ही जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे।

⇨ फ्युचर आपका क्या है? फ्युचर है सदा दिलखुश, सदा अधिकारी।

⇨ आपके फीचर्स वर्तमान समय की प्राप्ति और भविष्य की प्राप्ति आपकी शक्ल दिखाती है।

⇨ सदा यह अटेन्शन रखो कि हमारा चेहरा ऐसा साक्षात्कार कराने वाला है? कोई भी टीचर के सामने आये, टीचर को देख एक तो खुशमिजाज हो जाए, खुशी उसके जीवन में दिखाई दे। ऐसे खुशनुमा और खुशकिस्मत हो।

⇨ अभी आगे चल करके आपका चेहरा और चलन यह सेवा ज्यादा करेगा क्योंकि जैसे समय नाजुक आयेगा तो समय कम मिलेगा लेकिन चाहना बढ़ेगी, कुछ मिले, कुछ मिले।

⇨ इसके लिए टीचर्स को सदा ऐसे एवररेडी रहना चाहिए, जो कोई आवे वह कम से कम कुछ लेके ही जावे। चेहरे और चलन द्वारा भी कुछ न कुछ लेके जाये।

होमवर्क :- 02.02.2012

❖ **ब्राह्मण परिवार**

⇨ यह ब्राह्मण संसार है छोटा लेकिन अति प्यारा है।

⇨ क्योंकि यह संसार की एक-एक आत्मा श्रेष्ठ आत्मा हैं।

⇨ कोटों में कोई आत्मायें हैं। बाप के वर्से के अधिकारी आत्मायें हैं। बापदादा हर बच्चे को देख खुश होते हैं कि यह एक-एक बच्चा राजा बच्चा है।

❖ **स्वमान धारी वन स्वराज्य अधिकारी वनो**

⇨ बापदादा ने हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी और विश्व राज्य अधिकारी बनाया है।

⇨ इस समय सभी स्वराज्य अधिकारी हैं अर्थात् मन-बुद्धि, संस्कार, कर्मेन्द्रियों के राजा हैं। मन के भी मालिक हैं। हर एक बच्चा अपने को मन के मालिक, संस्कारों के भी मालिक समझते हो?

⇨ इस समय बापदादा ने हर एक को स्वराज्य अधिकारी के सीट पर बिठाया है। अब के स्वराज्यधारी हो और भविष्य का राज्य तो आपका है ही। डबल राज्य अधिकारी हो।

⇨ मैं स्वमानधारी आत्मा हूँ, इस स्मृति में बैठो तो देखो कितने स्वमानों की

होमवर्क - 2012

ऐसे माइन्ड कन्ट्रोल, जो चाहे वही मन संकल्प करे। रोज़ रात को रिजल्ट देखो आज मन की रूलिंग पावर, कन्ट्रोलिंग पावर कहाँ तक रही?

⇨ अभी व्यर्थ को समाप्त जल्दी-जल्दी करना चाहिए अब समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ।

⇨ जो बापदादा ने कहा है पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द लगाओ। वायुमण्डल बनाओ। एक दो के सहयोगी बन हर एक अपने-अपने स्थान को शक्तिशाली बनाओ, साथियों को शक्तिशाली बनाओ। कर्मयोगी की स्थिति उसमें अटेन्शन ज्यादा चाहिए।

❖ पहली वार वालों से :-

⇨ लास्ट समाप्ति के समय से तो पहले आ गये हैं। लेकिन जितना लेट आये हो इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा क्योंकि इस थोड़े टाइम में आपको पूरे 21 जन्मों का भविष्य बनाना है। इतना अटेन्शन रखना पड़ेगा। समय को बचाना, सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना। तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है।

❖ टीचर्स प्रति :-

⇨ टीचर्स बापदादा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनी हुई हैं।

⇨ टीचर्स माना ही जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे।

⇨ फ्युचर आपका क्या है? फ्युचर है सदा दिलखुश, सदा अधिकारी।

⇨ आपके फीचर्स वर्तमान समय की प्राप्ति और भविष्य की प्राप्ति आपकी शक्ल दिखाती है।

⇨ सदा यह अटेन्शन रखो कि हमारा चेहरा ऐसा साक्षात्कार कराने वाला है? कोई भी टीचर के सामने आये, टीचर को देख एक तो खुशमिजाज हो जाए, खुशी उसके जीवन में दिखाई दे। ऐसे खुशनुमा और खुशकिस्मत हो।

18

होमवर्क - 2012

⇨ अभी आगे चल करके आपका चेहरा और चलन यह सेवा ज्यादा करेगा क्योंकि जैसे समय नाजुक आयेगा तो समय कम मिलेगा लेकिन चाहना बढ़ेगी, कुछ मिले, कुछ मिले।

⇨ इसके लिए टीचर्स को सदा ऐसे एवररेडी रहना चाहिए, जो कोई आवे वह कम से कम कुछ लेके ही जावे। चेहरे और चलन द्वारा भी कुछ न कुछ लेके जाये।

होमवर्क :- 02.02.2012

❖ ब्राह्मण परिवार

⇨ यह ब्राह्मण संसार है छोटा लेकिन अति प्यारा है।

⇨ क्योंकि यह संसार की एक-एक आत्मा श्रेष्ठ आत्मा हैं।

⇨ कोटों में कोई आत्मायें हैं। बाप के वर्से के अधिकारी आत्मायें हैं। बापदादा हर बच्चे को देख खुश होते हैं कि यह एक-एक बच्चा राजा बच्चा है।

❖ स्वमान धारी वन स्वराज्य अधिकारी वनो

⇨ बापदादा ने हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी और विश्व राज्य अधिकारी बनाया है।

⇨ इस समय सभी स्वराज्य अधिकारी हैं अर्थात् मन-बुद्धि, संस्कार, कर्मेन्द्रियों के राजा हैं। मन के भी मालिक हैं। हर एक बच्चा अपने को मन के मालिक, संस्कारों के भी मालिक समझते हो?

⇨ इस समय बापदादा ने हर एक को स्वराज्य अधिकारी के सीट पर बिठाया है। अब के स्वराज्यधारी हो और भविष्य का राज्य तो आपका है ही। डबल राज्य अधिकारी हो।

⇨ मैं स्वमानधारी आत्मा हूँ, इस स्मृति में बैठो तो देखो कितने स्वमानों की

19